जब आप रेल में टिकट को भी एक बंधन समझ बे-टिकट बैठते हैं और बाद में आपके साथ बैठा यात्री भी बे-टिकट निकलता है और वह प्रथम श्रेणी का मजिस्ट्रेट होता है। कानून के डर का बोझ भी सिर से उतर जाता है।

जब आप छुरे की मदद से पूरी आजादी के साथ परीक्षा में नकल करते हैं।

जब आप पुरानी बातों के [illegible] छुटकारा पाते हैं। बीती बातें पूरी तरह भूल जा[illegible] जैसे चुनाव में किये वादे।

जब आये दिन बिजली विभाग बिजली गुल कर आपको प्रेमिका का हाथ थामने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है।

जब आप बंधनों के धागों से दूर रहते हैं। कैंटीन में चैन की बांसुरी बजाते हैं और टेबल पर लाल फीतों में बंधी फाइलें धूल चाटती रहती हैं।

जब आपको खुली हवा में सांस लेने का मौका मिलता है। जैसे तब जब बस छूट जाती है और पैदल घर जाना पड़ता है। सच मानिये बस एक चलता फिरता कैद खाना है जो जेल से भी ज्यादा दम घोंटू है।

कान्तिलाल जैन मथुरा (म० प्र०)

प्र० : क्योंजी काका, वास्तव में 'भगवान है भी, या
वैसे ही शोर मचा रखा है ?'

उ० : हो, चाहे वह नहीं हो, रहो नवाते माथ,
इस युक्ती से रहेंगे, लड्डू दोनों हाथ.
लड्डू दोनों हाथ, न हो तो क्या कर लेंगे ?
होंगे तो नास्तिक जी को उल्टा कर देंगे।

नरिन्द्र कुमार निन्दी, कपूरथला

प्र० : लड़कियां प्रायः हाथ में रूमाल क्यों लिए रहती हैं।

उ० : छेड़े उनसे मार्ग में, यदि कोई मुंह फट्ट,
नाक काट, रूमाल से पोंछ देंगी झट्ट।

साहिब सिंह सोनी, गंगानगर

प्र० : किसी नेता को कुत्ता काट खाए तो ?

उ० : कुत्ते को ले जाइए अस्पताल एटवंस,
डाक्टर से लगवाइए चौदह इंजैक्शन्स।
चौदह इंजेक्शस नहीं यदि लगवा पाएं,
तो कुत्ताजी, भाषण दे-दे कर मर जाएं।

सुनील कुमार मिश्रा, भिलाईनगर (म० प्र०)

प्र० : अगर आपको फिल्म निर्माता बना दिया जाए तो पहले
कौन सी फिल्म बनायेंगे ?

उ० : संजय जी की विजय से हुआ हमें यह इल्म,
'किस्सा कुर्सी का' बने, होय सुपरहिट फिल्म।

प्रवीन कुमार दीवान, पिलानी (राज०)

प्र० चन्द्रमा में खाई-खड्डे होते हुए भी इतना सुन्दर क्यों लगता
है ?

उ० : आकर्षक सुन्दर लगें, सदा दूर के ढोल,
अधिक निकट मत जाइए, खुल जाएगी पोल।

टी. एस. साहनी, बगीची पीरजी, दिल्ली

प्र० : सावन के अन्धे को हमेशा हरियाली दिखती है तो
नेता को ?

उ० : चश्मा हरियल रंग का, नेता को दे शांति,
सूखा में दिखेगी उसको हरियल क्रांति।

मनजीत सिंह पुराना, रामपुराफूल, (पंजाब)

प्र० : आपके पास ढेर सारे कारतूस हैं, क्या आपने लाइसेंस ले
रक्खा है ?

उ० : प्रश्न सरल या सख्त हो, कर देते विध्वंस,
काव्य कलम बंदूक है, चले बिना लैसंस।

सुरेन्द्रसिंह यादव, कानपुर

प्र० : लकड़ी जल कर कोयला हो जाती है, तो दिल जलकर क्या
होता है।

उ० : लकड़ी जलकर कोला हुई, कोला जलकर राख,
विरही दिल ऐसा जला, कोला हुआ न राख।

भारत खत्री, गांधी मार्केट, भिंड

प्र० : आदमी अपने को तीस मारखां कब समझने लगता है ?

उ० : तीस महीने से अधिक, चली एक सरकार,
तीस मारखां बन गया, चन्ना चौकीदार।

योगेश मेहता, लश्कर (ग्वालियर)

प्र० : अगर शर्म नाम की चीज इंसान से दूर चली जाए तो ?

उ० : हमसे पूछा कि कभी शर्म तुमको आती है,
आती है, मगर दाढ़ी को देख लौट जाती है।

देवीलाल नारंग, बुलन्दशहर

प्र० : भारतीय झण्डे में केसरिया रंग हिन्दुओं का, स
का और हरा मुसलमानों का है, तो सरदारों क

उ० : तीन रंग उन तीनों के हैं, नीचे लम्बा डंडा
सरदारों के इस डंडे पर, खड़ा देश का झण्डा है

चन्द्रभान अनाड़ी, जबलपुर

प्र० : जिन्दगी में साथी मिल जाते हैं, किन्तु मौत का सा
क्यों नहीं होता ?

उ० : जिन्दगी में क्या रखा, शरीर तो अनित्य है,
मृतक संग भीड़ चले, 'राम नाम सत्य है'।

एस. आर. सुपारीवाला, बुधवारा—भोपाल

प्र० : हीर रांझा, लला-मजनू, शीरीं फरहाद प्रेम के च
अमर हो गये। आजकल के प्रेमियों को को
पूछता ?

उ० : प्रेम-प्रीत में हो गए यह जोड़े बर्बाद,
[illegible]क उठाओ इश्क की, करें तुम्हारी याद।

गोपाल सिंहल फतहनगर (राज०)

प्र० : अमीर से होती [illegible] होती है,
दूर से होता है, [illegible] होती है। क्या ?

उ० : यह तो उनका [illegible] असली नकली या थे
इसके ऊपर चिपक [illegible] 'नमस्ते' वह हो

कुमारी शंकल्पा शर्मा, [illegible]—नेपाल

प्र० : सुख आता है, क्षणों को, दुख मिलता दिन-रात,
चिन्तन से चित दुखी है, सूख रहा है गात।

उ० : जब-जब सुख जितना मिले, कर लीजे स्टाक,
उसे ब्लैक में बेचिए, दुख हो जाय हलाक।

इन्द्र मोहन मिश्रा, कनखल (सहारनपुर)

प्र० : चरक पढ़ा, सुश्रुत पढ़ा, पढ़े निघण्टुक चार,
चर्म रोग हटता नहीं, कौन पाप की मार।

उ० : क्षय हो जाने दीजिए, पिछले सारे पाप,
चर्म रोग तब शर्म से, भागे अपने आप।

सतीश धमीजा पंजुवाना—सिरसा (हिसार)

प्र० : आग से खेलने पर हाथ जल जाता है तो हसी
खेलने पर ?

उ० : खतरनाक 'वे', आग से, अधिक खुदा की कसम,
सुन्दरियों के खेल में, दिल दिमाग हो भस्म

अपने उत्तर केवल
पोस्ट कार्ड पर
ही भेजें।

काका के का[illegible]
दीवाना साप्ता[illegible]क
८-बी, बहादुरशा[illegible] जफर
नई दि[illegible]
[illegible]१०००[illegible]

पिछले दिनों घसीटाराम की भेंट प्रोडयूसर डायरेक्टर बी० डी० खोपड़ा से हुई थी। खोपड़ा साहब ने घसीटाराम को बताया था कि वह जंगल एडवेंचर और मार-धाड़ पर आधारित एक फिलम बना रहे है, जिसका नाम है जम्बू की बेटी के जंगल में मंगल। घसीटाराम ने अपना मकान और गांव की जमीन बेचकर डायरेक्टर खोपड़ा को ढाई लाख रुपया दिया था और बदले में खोपड़ा साहब ने घसीटाराम को अपनी फिलम का हीरो बना दिया था। मोटू-पतलू और डाक्टर झटका को भी फिलम में रोल दिए गये थे और फिलम यूनिट के साथ यह सब मैसूर के जंगलों में पहुंच गये थे। आइए अब इस शूटिंग का आंखों देखा हाल देखिए !

फिल्म की हीरोइन शबाना आजमी कहां है डायरेक्टर साहब ?

तुम चबाना आजमी की ही गोद में तो लेटे हो।

क्या कहा शब‥‥शब‥‥शबाना नहीं, चबाना आजमी।

?

यह तो मेरी हड्डियां चबा जायेगी मुफ्त में।

मुफ्त में नहीं, ढाई लाख रुपया दिया है तुमने अपनी हड्डियां चबवाने के लिए।

क्या गड़बड़ कर रहे हो। फिलम में हर प्रकार के सीन होते हैं। और इस फिलम की तो कहानी ही बड़ी अजीब है। आगे चल कर तुम्हारी मुलाकात एक राजकुमारी से होगी। तुम राजकुमारी के साथ महल में जाकर मखमल के गद्दों पर लेटोगे।

आगे चल कर राजकुमारी से मुलाकात होगी ! महल में जाकर मखमल के गद्दों पर लेटूंगा !! तो फिर जल्दी चलो ना आगे ।
अभी चलेंगे । पहले जंगल एडवेंचर के सीन तो पूरे कर लें ।

पेड़ों पर यह बोर्ड लगा दो ताकि लोगों को दूर से पता चल जाए कि यहां फिल्म की शूटिंग हो रही है ।
लाओ, बोर्ड मैं लगा दूं । तुम फटाफट अगली शूटिंग की तैयारी करो ।
गिरगिट के बदलते
रंगों में जगमगाती फिल्म
जम्बू की बेटी
जंगल में मंगल

अभी तो इनके सभी काम करने पड़ेंगे प्यारे अचूक कुमार ।
से भरपूर
रंगीन फिल्म
जम्बू की बेटी
के जंगल में मंगल

बड़ा स्टार बन जाऊँ, फिर घास नहीं डालूंगा किसी को ।
अचूक कुमार की
पहली फिल्म
जम्बू की बेटी
के जंगल में मंगल

सबको अपने आगे-पीछे नचाऊंगा ।
रंगीन फिल्म
जम्बू की बेटी
के जंगल में मंगल

तुझे नहीं नचाऊंगा । तेरे आगे तो मैं नाचूंगा उम्र भर ।

हाथी के पांव के नीचे कुचलवाओगे मुझे ! इतना नहीं बता सकते थे कि यह कितनी खतरनाक जगह है !!
मैसूर के जंगलों में किसी भी समय हाथी से पाला पड़ सकता है, यह तो तुम्हें खुद पता होना चाहिए ।
चलो हमारे फाईनेंसर की जान बच गई । अचूक कुमार हाथी तले कुचला जाता तो और फाइनेंस कहां से आता ।
क्या मतलब है तुम्हारा । तुमने कहा था ढाई लाख से काम चल जाएगा । वह मैंने तुम्हें दे दिये ।
वह बड़ी तेजी से खत्म होते जा रहे हैं । और रुपये की जरूरत पड़ी तो क्या उसके बगैर फिल्म को अधूरी रहने दोगे ।
चलो बहस छोड़ो और अगले सीन की तैयारी करो । अगले सीन में तुम्हारी दोस्ती कुछ बन्दरों से हो जाती है ।
क्या बन्दर-बन्दरियों के अलावा और कुछ नहीं है तुम्हारी फिल्म में ।
और तुम हो ना ।
जंगल एडवेंचर की फिल्म में यही कुछ होता है ।
जम्बू की बेटी
इस सीन में अचूक कुमार बन्दरों की बोली सीखता है और उनके साथ डांस करता है ।
वाह रे अचूक कुमार । जैसे तू शबाना आजमी के नाम पर धोखा खा गया वैसे ही बन्दरिया गोस्वामी के नाम पर धोखा खा गया है ।
कुचुर कुच कुच कुच ।
तुम भी बोलो, कुच कुच

तुम भी डांस करो बन्दरों के साथ। हम फिल्म शूट कर रहे हैं।
मेरी यह हालत बनाने से तो अच्छा है, कैमरे की बजाये मुझे बंदूक से शूट कर दो।

अगले सीन में तुम्हारा मुकाबला एक बड़े मगरमच्छ से होगा। और तुम अपने छुरे से उसे मार डालोगे।
मैं मगर मच्छ को मार डालूंगा? क्या मजाक कर रहे हो? लगता है अशोक कुमार और दिलीप कुमार की तरह बड़ा स्टार बनकर चमकने से पहले ही तुम अचूक कुमार को धूल में मिला दोगे।
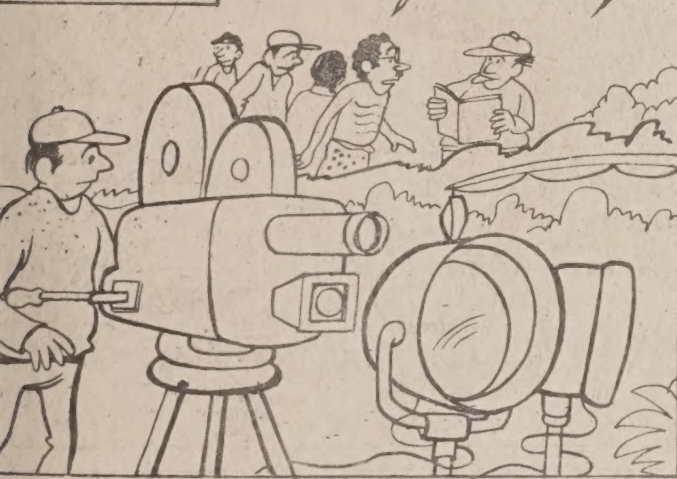
मगरमच्छ नकली है। रबड़ का बना हुआ। देखो उसमें पम्प से हवा भरी जा रही है।
मुझ में हिम्मत भरने के लिए भी कोई पम्प है क्या तुम्हारे पास?

ठीक है। अब अचूक कुमार मगरमच्छ की कमर में छुरा मारेगा। रेडी—! एक्शन—!!

घसीटाराम ने रबड़ के मगरमच्छ की कमर पर इस जोर से छुरा मारा कि वह उसकी रबड़ की खाल में घुसता चला गया और मगरमच्छ पंचर हो गया।
पंचर के स्थान से मगरमच्छ में भरी हवा इतनी तेजी
निकली कि उसने घसीटाराम का कबाड़ा कर दिया।
कह रहे थे नकली है। इससे तो असली होता तो वह ही अच्छा था।
वाह-वाह ! मगरमच्छ की कमर में क्या छुरा मारा है
मजा आ गया। नकली मगरमच्छ की कमर से सारी हवा नि
गई
जो बाकी है वह असली अचूक कुमार की कमर से निकलेगी।
तुम पूरी तरह मेरा जनाजा निकलवा कर दम लोगे। अब वह सीन फिलमाओ ना जिनमें मेरी भेंट राजकुमारी से होती है।
DIRECTOR

इस बार घसीटाराम ने आगे हाथ बढ़ाया तो बेल की टहनी की बजाए सांप हाथ में आ आ गया।
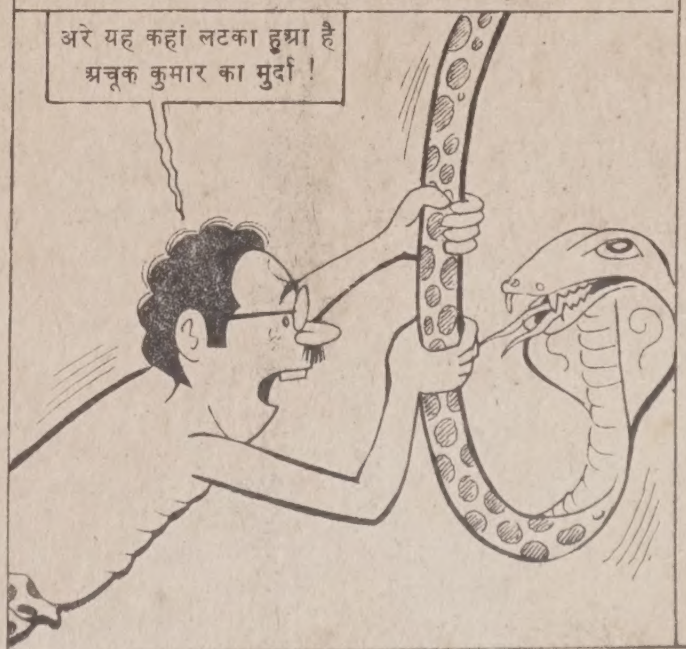
छोड़ना नहीं। नीचे बड़े-बड़े पत्थर हैं।
बचाओ। बचाओ।
मगरमच्छ रबड़ का था। पर पत्थर रबड़ के नहीं हैं।

बचाओ। बचाओ।
शोर मचाने की बजाए वहां देख-भाल कर गिरना जहां सूखी घास हो।

अचूक कुमार कहां घनी झाड़ियों में गिरा है जहां हमारा जाना मुश्किल है।
मुश्किल क्या है ? पेड़ पर चढ़कर वहां से नीचे गिर जाओ जहां से अचूक कुमार गिरा है।

बेचारे का बे-मोल मरवा दिया। चलो देखो अब वह कहां है ?

घनी झाड़ियों में सब आगे बढ़ने लगे। पर वहां घसीटाराम का कहीं पता नहीं था।

घसीटाराम सूखी घास पर गिरा था। उसकी जान तो बच गई थी। पर चिपकने वाली घास उसके बदन पर ऐसी चिपकी थी, कि उसे पूरा भालू बना दिया था।

तभी वहां एक बहुत बड़ा और भारी-भरकम बनमानस आ गया।
रबड़ का होगा। इससे क्या डरना। अभी इसकी फूंक निकाल दूंगा।

आगामी अंक में फिर मिलिए अपने इन कलाकारों से।
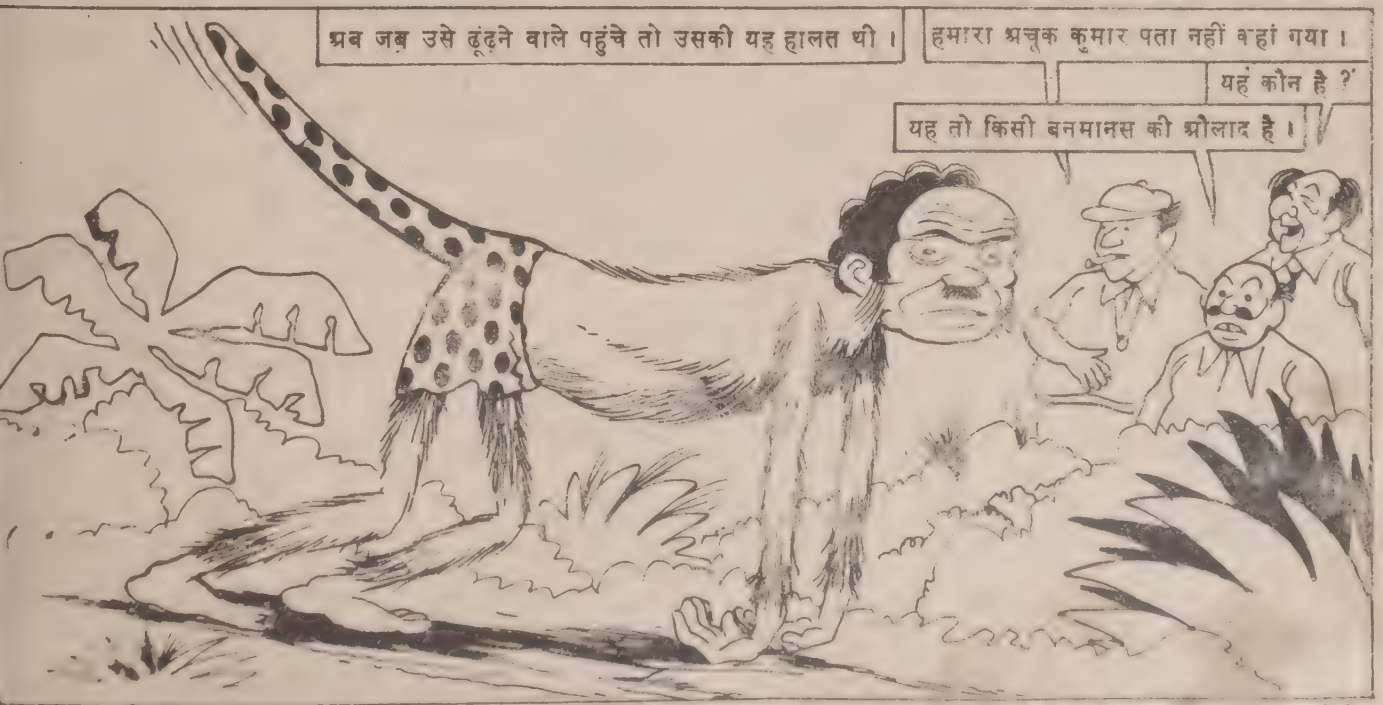
राजू ने अन्दाजा लगाया। 'ऊपर बीच में गड्ढा सा है जिसमें यह खोपड़ी टिक सकती है। ठीक है इसमें एक ओर लिखा भी है बेताल।'

राजू ने लकड़ी का टुकड़ा टेबल पर रखा और महेन्द्र ने इस पर बेताल को रखा। बेताल ऐसा लगता था जैसे तीनों को देख हंस रहा है।

'शायद अलीबाबा ही इससे बोलवा पाता होगा।' राजू बोला, 'अन्दर कुछ न कुछ कारीगरी कर रखी होगी।'

राजू ने बेताल को उठा लिया और निकट से और से देखा। खोपड़ी के छेदों से अन्दर रोशनी की ओर करके अच्छी तरह झांका, 'मुझे तो कुछ नजर नहीं आता। न ही इसमें ट्रांसमिटर फिट है जैसा कि सुरेश का कहना था। खालिस खोपड़ी है। अली-बाबा कैसे इससे बुलवा पाता होगा ? समझ नहीं आता।'

राजू ने खोपड़ी से कहा, 'बेताल तुम सचमुच बोलते हो तो कुछ कहो।'

जवाब में पूरी चुप्पी मिली।

महेन्द्र बोला, 'इस समय शायद यह बोलने के मूड में नहीं है। चलो देखें सन्दूक में और क्या है।'

तीनों फिर संदूक पर झुक गये। अन्दर और कई प्रकार के रेशमी लिबास थे। जादू की छड़ी निकली। तीन-चार पतली मुड़ी हुई तलवारें। तीनों इन वस्तुओं का निरी-क्षण कर ही रहे थे कि पीछे से उन्हें स्वर में छींकने की आवाज आई।

तीनों ने मुड़ कर पीछे देखा। पीछे कोई नहीं था : सिवा टेबल पर रखी खोपड़ी।

अंधेरे में हुयी अजीब बातचीत

तीनों ने आश्चर्य चकित हो एक दूसरे की ओर देखा। ''इसने छींका !' श्याम की भौंहें नाक पर उतर आयीं, 'महिन्दर सच बता तूने तो नहीं छींका ?'

'हममें से किसी ने नहीं छींका यार!' महिन्दर ने उत्तर दिया, 'मैं दावे के साथ कह सकता हू कि छीक की आवाज पीछे से आई।'

'हैरानी की बात है' राजू बुदबुदाया, 'बेताल की खोपड़ी में अलीबाबा ने अगर कोई माइक्रोफोन वगैरह फिट करने की चालाकी की होती तो हमें पता लग जाता। और कोई ट्रिक होता तो भी हम भांप जाते ! लेकिन अलीबाबा यहां है ही नहीं ! शायद मर चुका है। खोपड़ी अपने आप ही छींक कैसे मार सकती है। चलो इसका दोबारा निरीक्षण करें ?

राजू ने बेताल की खोपड़ी को हाथ में उठाया और घुमा घुमा कर देखा। टार्च से सुराखों से भीतर तेज रोशनी फेंक कर भी जांच की लेकिन खोपड़ी में किसी सन्देह जनक चीज का निशान भी नहीं था।

'कोई तार नहीं कुछ भी नहीं है।' राजू ने कहा 'यह तो बड़ा अजीब रहस्य है।

'लेकिन एक खोपड़ी क्यों और कैसे छींक सकती है ? इसका कोई कारण क्या हो सकता है ?' महिन्दर ने स्पष्टीकरण मांगा।

'मैं नहीं जानता क्यों और न ही यह समझ सका हू कैसे ?' राजू ने गला खंखारा, 'हम जासूस हैं इसलिए हमें ही तो इस रहस्य को सुलझाना होगा।'

'भाइयों मेरी बात सुनो' श्याम ने हाथ जोड़े, 'इस रहस्य के पचड़े में मत पड़ो ! इसी के चक्कर में एक जादूगर हमें धमकी दे गया। उसने हवा में अंडा गायब कर दिया। संदूक खोला तो इसमें से छींक मारने वाली खोपड़ी निकली ! कल को न जाने... ।'

श्याम की बात को राजू की अम्मा की तेज रौबदार आवाज ने काट दिया। नीचे से वह उन्हें बुला रही थी। खाना तैयार हो गया था श्याम और महिन्दर को भी याद आया कि उन्हें अपने घर जाना है। कल फिर आने का वादा कर दोनों ने विदा ली। राजू ने जल्दी जल्दी अलीबाबा का सामान सन्दूक में डाला। राजू ने बेताल की खोपड़ी बाहर ही रहने दी। हैडक्वार्टर गैराज पर होने की वजह से असुरक्षित जगह थी क्योंकि बाहर सीढ़ियों से होकर उसका प्रवेश द्वार था। पड़ोस में हुई चोरी की वजह से वह आशंकित था क्योंकि संदूक की खबर समाचार पत्र में छपने की वजह से चोर संदूक में खजाना होने की अटकल पर विश्वास कर उसे उड़ाने की कोशिश न करें। राजू खोपड़ी का रहस्य जानने को कृत संकल्प था उसने निश्चय किया कि खोपड़ी को ड्राइंग रुम में किसी सुरक्षित जगह रखा जाये।

जैसे ही हाथ में खोपड़ी उठाये राजू ने ड्राइंग रुम में प्रवेश किया राजू की माँ ने जो टेबल पर खाना लगा रही थी सिर उठाया और हल्की सी चीख उनके गले से निकल गयी।

'राजू भगवान के लिये...' वह चिल्ला-यी, 'तुम्हारे हाथ में यह क्या है ?'

'यह बेताल है अम्मा ! कहा जाता है कि यह बोलता है।'

तभी राजू के पिता ने कमरे में प्रवेश किया, 'क्या कहा, क्या कहा बेटे ? यह

ोलती है। हा हा हा हा। देखने में तो काफी समझदार लगता है। क्या कहता है यह?' अपने बेटे के हाथ में खोपड़ी देख चौंके नहीं क्योंकि पुलिस में लम्बी नौकरी करते-करते ऐसी चीजें उनके लिये सामान्य हो गयी थीं।

राजू की माँ ने चिढ़े स्वर में कहा, इससे कह दो कि मुझसे कुछ न बोले वर्ना इसकी सात पीढ़ियों की खबर लूंगी। राजू इसे यहाँ मत रखो ! मैं इसे देखना भी नहीं चाहती।'

घर में राजू की माँ का निर्णय अन्तिम होता था। राजू खोपड़ी को लिये अपने सोने के कमरे की ओर भागा और बेताल को उसके चौखटे पर बिस्तर के साथ वाले किताबों के रैक के ऊपर रखा और खाना खाने नीचे गया।

हमेशा की तरह खाना स्वादिष्ट बना था। आज तो राजू की मनपसन्द चीज खीर भी बनी थी। डट कर खाना खाने के कारण उसे जल्दी ही नींद आने लगी, अतः वह अपने माता पिता को गुडनाइट कर सोने अपने कमरे में चला गया।

बिस्तर में घुसते हुए उसे बेताल का ख्याल आया ! काफी सोच विचार के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा कि एक खोपड़ी किसी तरह बोल नहीं सकती। वह विज्ञान का विद्यार्थी था। रहस्य बेताल के मालिक अलीबाबा में ही होगा। वह कुछ न कुछ चालाकी करता होगा।

राजू की पलकें झपकने लगीं तो उसने बत्ती बुझा दी। इससे पहले कि वह पूरी तरह नींद की गोद में चला जाये उसे सिर झटक कर स्वयं को चेतनावस्था में लाना पड़ा। कमरे में हल्की सी सीटी की आवाज गूंज रही थी।

राजू चौंक कर बिस्तर में उठ कर बैठ गया।

'कौन है ?' राजू ने पुकारा, 'मां तुम आई हो कमरे में ?' कभी-कभी राजू की मां सोते समय उसके कमरे में आया करती थी यह देखने कि उसने कम्बल वगैरह ठीक तरह ओढ़ रखा है या नहीं।

'यह मैं हूं !' एक नरम सी बारीक आवाज किताबों के रैक की ओर से आई, 'मैं बेताल।'

'बेताल ?' राजू का गला सूख गया ! शरीर में कंपकंपी हो आई।

'मेरे बोलने का समय आ गया है... बत्ती मत जलाओ...केवल मेरी बात सुनो... गौर से...डरो मत।'

आवाज रुक-रुक कर आ रही थी। राजू ने आंखें फैलाकर रैक पर रखी बेताल की खोपड़ी की ओर देखा। अंधेरे में बेताल काली चादर पर हल्का दुधिया दाग सा नजर आ रहा था।

'ठ-ठ-ठीक है।' राजू ने साहस बटोर कर गले से बाहर कुछ शब्द धकेले।

'शाबाश !' आवाज आई, 'तुम्हें कल...जरूर जाना होगा...रामबाग...वहां रानी से मिलो...कोडवर्ड होगा बेताल।'

'अच्छा।' राजू की हिम्मत लौटने लगी थी, 'लेकिन यह सब क्या है। कौन बोल रहा है ?'

'मैं बेताल।' आवाज क्षीण होने लगी और लुप्त हो गयी। राजु ने हाथ बढ़ा कर बत्ती का स्विच ऑन कर दिया और बेताल की ओर घूरने लगा। बेताल की खोपड़ी शांत अपने चौखटे पर बैठी थी। दांत जैसे खिला-खिलाकर हंसने की मुदरा में हैं।

एक मृत व्यक्ति की खोपड़ी नहीं बोल सकती। लेकिन...आवाज कमरे में से ही आयी थी। खिड़की की ओर से नहीं आयी थी। खिड़की का ख्याल आते ही राजू उछल कर कम्बल झटकते हुए खिड़की की ओर लपका। बाहर दूर-दूर तक कोई नहीं था।

बौखलाया राजू वापिस बिस्तर में आ लेटा।

बेताल के संदेश के अनुसार उसे रामबाग जाकर किसी रानी से मिलना है। शायद उसे नहीं जाना चाहिए। लेकिन राजू को पता था कि वह अवश्य जायेगा। रहस्य हल करने की उत्सुकता स्वयं उसे खींच कर ले जायेगी।

रहस्यमय संदेश

'अच्छा तो तुम नहीं मानते तो मैं यहीं खड़ा रहता हूं साइकिलों के पास' महिन्दर ने कहा।

दूसरे दिन श्याम नहीं आ पाया था। राजू और महिन्दर दोनों साइकिलों पर रामबाग पहुंचे थे। रामबाग एक उजाड़ सा मैदान शहर के छोर पर था। किसी जमाने में बाग रहा होगा अब तो केवल आठ दस पेड़ ही नजर आते थे। रामबाग में प्रायः घुमन्तु जातियां आकर तम्बुओं में डेरे लगाती थीं। राजस्थान के कठपुतली बाज लोक-गायक नट, बाजीगर, लोक कलाकार तथा बंजारे प्रायः ही यहां देखे जा सकते थे। इस समय भी मैदान के एक छोर पर आठ दस तम्बू लगे थे। कुछ चारपाइयां बाहर बिछी थीं।

राजू बोला, 'हां तुम यहीं ठहरना महिन्दर। मुझे तो कोई खतरा नजर नहीं आता। इन्हीं तम्बुओं में से किसी एक में रानी से मुलाकात होगी शायद।'

महिन्दर को अब तक राजू की बात पर विश्वास नहीं हो रहा था, 'बेताल की खोपड़ी ने तुम्हें यहां आने के लिए कहा सचमुच ? अंधेरे में ! तुमने सपना तो नहीं देखा।'

'नहीं-नहीं यार मेरी बात का विश्वास कर मैं अच्छी तरह जाग रहा था। मैं अब जाकर देखता हूं कि चक्कर क्या है ? अगर मैं आधे घंटे तक लौटता नजर न आऊं तो तू जाकर डैडी को खबर करना।'

'ठीक है।' महिन्दर बोला, 'लेकिन मुझे तो यह पचड़ा अच्छा नहीं लग रहा है।'

'अरे कुछ खतरा हुआ तो मैं चिल्लाऊंगा' राजू ने आश्वासन दिया।

राजू तम्बुओं की ओर बढ़ा। तम्बुओं के पास ही बंजारों की वेष-भूसा में एक हट्टाकट्टा युवक चाकू से बांस छील रहा था। राजू उसी के पास पहुंचा।

'क्या चाहिए ?' बंजारे युवक ने खुश्क आवाज में पूछा।

'मुझे बेताल ने भेजा है' राजू ने कहा। उसे पूरा विश्वास नहीं था कि बेताल का दिया कोडवर्ड कुछ असर करेगा या नहीं।

'हैं ?' बंजारे ने राजू की तरफ घूर कर देखा। कुछ देर बिना कुछ शब्द बोले घूरने के बाद वह उठा और हाथ से राजू को ठहरने का इशारा कर पास वाले तम्बू में घुस गया। कुछ ही देर में एक और लम्बी मूंछों वाला बंजारा तम्बू से बाहर निकला। राजू को पास बुलाकर भारी आवाज में बोला, 'हम गोगोल ! रानी

मिलता नहीं मिलता अभी बताता ! तुम ठैरो।' इतना कह कर वह पीछे के तम्बूओं के झुरमुट में गायब हो गया। कुछ देर बाद लौटा तो ताली बजाता हुआ, 'इधर आओ—रानी मिलता।'

राजू बंजारे के पीछे-पीछे तम्बुओं के बीच से आगे बढ़ा। एक लाल तम्बू की ओर इशारा कर उसने राजू को अन्दर जाने के लिए कहा।

तम्बू के अन्दर जरा अंधेरा था। तम्बू में नीचे चौकोर डिजायनों वाली दरी बिछी थी। एक ओर एक कुर्सी पर एक अधेड़ औरत विचित्र वेष में बैठी थी। सिर गले और बाहों में उसने सीपी व मनके की असंख्य मालायें पहन रखी थीं। बाल खुले झूल रहे थे। सामने लकड़ी के टेबल पर स्टैंड पर शीशे का काला गोला रखा था। साथ में एक खाली कुर्सी रखी थी।

राजू को सम्बोधित कर वह बोली, 'मेरा नाम रानी है। भविष्य बताने वाली बंजारिन रानी। बोलो तुम अपने भविष्य का हाल जानना चाहते हो ?'

'नहीं मुझे अपना भविष्य नहीं पूछना, राजू ने उत्तर दिया, 'मुझे तो बेताल ने यहां आने के लिए कहा था।'

'ओह बेताल ने !' रानी ने अपनी भारी आवाज में कहा, 'लेकिन बेताल तो मर चुका है।'

बेताल की खोपड़ी की याद आते ही राजू को मानना पड़ा कि बेताल मर चुका है तभी तो उसकी खोपड़ी बची है।

लेकिन फिर भी बेताल ने तुमसे बात की ? रानी ने फुसफुसाहट के साथ कहा, 'अजीब...बहुत अजीब ! बैठ जाओ बेटे ! मैं अपने इस जादुई गोले में देखकर बताती हूं।'

राजू लकड़ी की खाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

'खामोश।' रानी ने आदेश दिया, 'जादुई गोला खामोशी चाहता है ! कुछ मत बोलना।'

राजू ने सिर हिला कर हामी भरी। बंजारिन रानी ने अपने दोनों हाथ हल्के से टेबल पर रखे और आगे झुक कर काले गोले पर टिकटिकी बांध देखने लगी। वह बुत्त की तरह अचल हो गयी। उसके सांस लेने की आवाज तक नहीं आ रही थी। लगभग पांच मिनट इसी प्रकार गुजरे फिर आखिर उसने मुंह खोला। नजरें काले गोले पर ही जमी रहीं।

'मुझे एक संदूक नजर आया।' रानी ने दबी आवाज में कहा, 'मुझे कई लोग नजर आये जो उस संदूक को हथियाना चाहते हैं। एक और आदमी दीखा वह भयभीत था। उसका नाम...हां उसका नाम 'अ' से शुरू होता है। वह डरा हुआ है ! मदद चाहता है। वह तुम्हें सहायता के लिये पुकार रहा है। गोले में दृष्य और साफ हो गया है ! मुझे नोट नजर आते हैं...बहुत से नोट ! लोगों को वह चाहिए। लेकिन नोटों का खजाना छुपाया हुआ है। काले बदनुमा साये के पीछे ! खजाना गायब है। किसी को पता नहीं कहां छुपाया गया है।'

'काले गोले का धुंधला रहा है। 'अ' अक्षर से शुरू होने वाले नाम वाला व्यक्ति गायब हो गया है। आदमियों की दुनिया से लुप्त हो गया है। वह मर गया है फिर भी जिन्दा है। आगे कुछ नजर नहीं आता।'

रानी बंजारिन जो काफी देर से गोले पर झुकी थी पीछे हटी ! कमर सीधी की एक और लम्बी सांस छोड़ी, 'गोले में देखने में दिमाग, आंखों और शरीर पर बहुत दबाव पड़ता है।' वह बोली, 'आज तो बस इतना ही कर सकती हूं। मैंने जो कुछ बताया उससे तुम्हें कुछ पता लगा ?'

'कुछ-कुछ।' राजू ने जवाब दिया, संदूक के बारे में। मेरे पास वह संदूक है जिसे लोग हथियाना चाहते हैं। अ से अलीबाबा बनता होगा। अलीबाबा दि ग्रेट जादूगर।'

'अलीबाबा दि ग्रेट।' रानी बुदबुदायी 'वह तो बंजारों का मित्र था लेकिन अब गायब हो गया है।'

राजू ने रानी की ओर देखा, 'आपने बताया कि वह आदमियों की दुनिया से लुप्त हो चुका है। वह मर गया है फिर भी जिंदा है। मैं इस बात का अर्थ नहीं समझा। क्या मतलब है इसका ?'

रानी ने इन्कार की मुद्रा में सिर झटकाया, 'मैं कुछ नहीं कह सकती। लेकिन जादुई गोला झूठ नहीं बोलता। हम बंजारे अलीबाबा को वापिस चाहते हैं। वह हमारा मित्र था। शायद तुम सहायता करो ! तुम बुद्धिमान लड़के हो। नयी उमर के ताजे दिमाग वाले जासूस हो ! तुम्हारी पैनी-निगाह वह देख सकती है जो अधेड़ व बूढ़े जासूस नहीं देख पाते।'

'मेरी समझ में नहीं आता मैं कैसे मदद कर सकता हूं।' राजू ने प्रतिरोध किया, 'मुझे अलीबाबा के बारे में कुछ पता नहीं है। खजाने के बारे में आज ही सुना है। मैं तो केवल एक ही नीलामी में अलीबाबा का संदूक खरीदा था। उसमें बेताल की खोपड़ी थी। बेताल ने मुझे यहां आने के लिए कहा। इसके इलावा मैं कुछ भी नहीं जानता।'

रानी ने आंखें बंद कर लम्बी सांस ली और मुलायम स्वर में हौंसला बढ़ाया, 'बेटा लम्बे सफर की शुरूआत भी एक छोटे से कदम से ही होती है। अच्छा अब जाओ। इंतजार करो। शायद तुम कुछ और जान पाओ ! संदूक सुरक्षित रखना। 'अग बेताल फिर बोले तो ध्यान से सुनना।'

राजू बाहर आया। सारा मामला पह से भी ज्यादा उलझ गया था। गोगो बंजारा उसे तंबुओं की सीमा के बाहर त छोड़ने आया। महिन्दर सड़क के किना पेड़ के नीचे उसी को अपनी ओर आते दे रहा था।

महिन्दर ने आवाज दी, राजू तुम्हें ग काफी समय हो गया था। मैं तो पास कह से पुलिस को टेलीफोन करने की सोच रह था, अच्छा हुआ तुम आ गये। क्या हुआ ?

'मैं क्या बताऊं ?' पास आने पर राज ने कहा, 'मतलब यह सब अजीब सी पहेल बन गयी है।'

दोनों अपनी-अपनी साइकिल पर सवा हुये और घर की ओर चल पड़े। रास्ते राजू ने सारी घटना महिन्दर को बताई

महिन्दर ने टिप्पणी दी, 'यह सचमु ही गुत्थी बन गयी है। अलीबाबा और छुप हुआ खजाना या नोट, और अलीबाबा म गया फिर भी जिन्दा।'

'मेरी भी समझ में कुछ नहीं आया। सामने से आते ट्रक से राजू ने साइकिल बचाई।

'राजू !' एकाएक महिन्दर की आंखे चमकी, 'हो सकता है नोट या खजाना अली-बाबा के उस संदूक में छिपे हों। बेताल क खोपड़ी मिलने के बाद हमने संदूक के नी अच्छी तरह तलाशी नहीं ली।'

'मैं भी ऐसा ही कुछ सोच रहा था राजू ने स्वीकार किया, 'शायद लोग बेता की खोपड़ी मिलने के पीछे पड़े हों। घर च कर देखते हैं।'

अचानक महिन्दर ने देखा कि काफ समय से एक काली फियेट कार उनके पीछे पीछे चल रही थी। उसे शक हुआ कि शायद वह उनका पीछा कर रही हो। उस दबे स्वर में राजू को बात बतायी। दोन सलाह करके घर का रास्ता छोड़ दूसरी ओ मुड़ गये ! तीन चार बार वैसे ही मोड़ ले के बाद उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो पाय कि वह कार अब भी पीछे लगी थी ! सच मुच कोई उनका पीछा कर रहा था उनके लिये साइकिलों पर सवार होने के कारण पीछा करने वाले को चकमा देन मुश्किल न था। वे ऐसे इलाके में थे जहां क पतली गलियां थी जिनमें केवल साइकिल या स्कूटर ही गुजर सकते थे।

कार से पीछा छुड़ाने के बाद वे घर की ओर मुड़ तो महिन्दर ने मत व्यक्त किया 'यह ठीक नहीं है। मरे इंसान की खोपड़ी जो रात को बोलती है, संदूक के पीछे पड़े लोग बंजारिन की अजीब बातें और पीछा

शेष पृष्ठ ३४ पर

फैंण्टम और जंगल शहर

खोपड़ी गुफा में ।
तुम्हारी सन्तान जल्द होने वाली है ।
हाँ, बहुत जल्दी मिस टगामा

हाँ…तुम जन्म कहाँ दोगी ?
यहीं पर, और कहाँ !

गुरन…बूढ़े दादा मौज डायना यहीं जन्म देगी!

क्या किस्मत पायी है ! हम बिल्कुल भूखे थे… केवल डन्डे हथियार के लिये…
हाँ और फिर यह सब बन्दूकें हमें मिलीं और बाकी सब चीजें भी ।

वह बुड्ढा बड़ी शान से जा रहा था, पता नहीं कौन था ?
उस व्यापारी का अब कुछ मतलब नहीं । उसे शेर चीते अभी तक खा गये होंगे ।

हमारे पास यहाँ मावीतान तक पहुँचने के लिये बहुत सामान है ।
और वहाँ पहुँच कर यह सब बेचकर एक मोटर-बोट खरीद लेंगे । और फिर अलविदा ।

हम क्यों नहीं किसी आदमी को मार दें और उसका सामान लूट लें । हमारे पीछे कोई भी नहीं है ।
क्या तुम्हें हर जानदार चीज को मारना जरूरी है ।

हाँ, मुझे मारना बहुत पसन्द आता है । यहीं पर तो गोली चला सकता हूँ ।

गोली चलानी है तो यहाँ चलाओ, कोई कानून नहीं ।
बस चुप करो बहुत देर हो रही है ।

ये लुटेरे हर जगह निशान छोड़ते हुये जा रहे हैं । पकड़े जाने की कोई फिकर नहीं । क्या है डेविल ?

लुटेरों ने मारा । उनके पास अपनी बन्दूकों के अलावा जॉय की बन्दूकें भी हैं ।

और ये मजे के लिये गोली चला रहे हैं । अब उन्हें जल्द पकड़ना होगा ।

वे लुटेर यहां रुके थे ।
राख अभी भी गर्म है

चुपचाप चलो, हम बहुत करीब हैं ।

वे रहे, वहां ।

उस बुड्ढे की शराब बड़ी अच्छी है ।
अरे ! सारी मत पी जाना ।

वह बिल्कुल खुले में है, कोई झाड़ी भी नहीं । छुपकर उन तक जाना

असम्भव । तो हमें खुले में ही जाना होगा ।
चलो हीरो ।

World rights reserved.

यह कौन है ?
क्या फर्क पड़ता है, । गोली मारो, एक···दो···तीन ।

फेंटम का अचूक निशाना ।
!
!

कोई इन्सान ऐसे नहीं मार सकता ।
भूत है !

चलो हीरो ।

(क्रमशः)

प्र० : रेडियो खगोल विज्ञान क्या होता है ?

उ० : तारे हमें इसलिए दिखाई देते हैं क्योंकि उनका प्रकाश हम तक पहुंचता है, प्रकाश एक प्रकार की विकिरण होता है। प्रकाश के अतिरिक्त तारों से दूसरे प्रकार की विकिरण भी प्रसारित होती हैं। इनमें एक रेडियो तरंग होती है। इन रेडियो तरंगों में से कुछ पृथ्वी के रेडियो तरंग ग्रहण करने वाले यन्त्रों द्वारा ग्रहण की जाती हैं। ये यन्त्र इन तरंगों को एकत्रित कर उसी प्रकार बड़ा कर लेते है जैसे टेलिस्कोप तस्वीर की तरंगों को एकत्रित कर बड़ा कर लेता है। इसलिए इन यन्त्रों को रेडियो टेलिस्कोप कहते हैं। इन यन्त्रों की सहायता से तारों के अध्ययन को रेडियो खगोल विज्ञान कहते हैं। अन्तरिक्ष से आने वाली ये रेडियो तरंगें, रेडियो तथा टेलिविजन प्रसारण में उपयोग की जाने वाली तरंगों से बहुत छोटी होती हैं, इसलिए रेडियो विज्ञानिकों को इन तरंगों को ग्रहण करने के लिये विशेष रेडियो तथा ऐन्टीना बनाने पड़ते हैं।

रेडियो टेलिस्कोप के दो भाग होते हैं एक ऐन्टीना, दूसरा तरंग ग्रहण करने वाला यन्त्र। ऐन्टोना धातु की एक विशाल तश्तरीनुमा होती है जो कि स्टैंड पर ऐसे लगायी जाती है कि उसे आकाश के किसी भाग की ओर आसानी से घुमाया जा सकता है इस एन्टीना द्वारा एकत्रित रेडियो तरंग बहुधा बहुत ही कमजोर होती है तथा इनके संकेतों को बड़ा किया जाता है।

अधिकतर खगोल वैज्ञानिक इन तरंगों के रिकार्ड कागज पर बना लेते हैं। रिकार्ड करने वाले पैन कागज की पट्टियों पर टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं द्वारा इनको चित्रित करते हैं। इनसे खगोल वैज्ञानिकों के पास इन का रिकार्ड पक्का बन जाता है।

ये रेडियो टेलिस्कोप हर मौसम में कार्य कर सकते हैं जैसा दूसरे टेलिस्कोप के लिये सम्भव नहीं है। इन रेडियो टेलिस्कोपों को हर सुलभ स्थान पर बनाया जा सकता है आवश्यकता होने पर इन्हें ऊंचे से ऊंचे स्थान और पहाड़ी पर भी लगाया जा सकता है।

प्र०—क्या पक्षियों के कान होते हैं, इनकी सुनने की शक्ति कितनी विकसित होती है ?

उ० : पक्षी एक बहुत ही अद्भुत उड़ने का कार्य करते है। इस कारण इनके शरीर की बनावट में हर बात उनके इस अनोखे कार्य से जुड़ी होती है। इनके शरीर के भीतरी तथा बाहरी दोनों ही रूपों को तथा इनके शरीर के भीतर के तन्त्र तन्त्रिकाओं को भी इसमें सम्मिलित किया गया है। उदाहरण के लिए उड़ने वाले पक्षी के लिए तीव्र दृष्टि अनिवार्य है, पक्षियों की दृष्टि उनके जीवन के लिए सबसे अधिक महत्व रखती है। शरीर की तुलना में रीढ़ की हड्डी वाले अन्य पशुओं की अपेक्षा पक्षियों की आँखें कहीं बड़ी होती हैं। बहुत से पक्षी अपनी दोनों आंखों से अलग-अलग क्षेत्र को देखने में भी समर्थ होते हैं। दूसरे कुछ पक्षी बहुत दूर से भी, किसी भी वस्तु को बहुत अच्छी तरह देखकर उसका पूरी तौर से निरीक्षण उड़ते-उड़ते ही कर लेते हैं। चील, बाज इत्यादि ऐसे पक्षियों के अच्छे उदाहरण हैं।

तीव्र दृष्टि के साथ-साथ पक्षियों के लिए सुनने की अच्छी शक्ति होना भी आवश्यक होती है। इनकी सुनने की शक्ति भी बहुत तेज होती है। पक्षियों के कान होते हैं जिससे ये भली-भाँति सुनते हैं तथा कानों की सहायता से ही ये अपना संतुलन तथा दिशा ज्ञान प्राप्त करते हैं।

अधिकतर पक्षियों की चोंच हमारे नाखून के समान सख्त होती हैं। फिर भी कुछ पक्षी भोजन का स्वाद भलीभाँति पता लगा लेते हैं और अपने पसन्द के भोजन का चुनाव बहुत शीघ्र कर लेते हैं। इन सब बातों का अच्छा ज्ञान होते हुए भी ऐसा प्रतीत होता है कि पक्षियों को सुंघने की शक्ति की आवश्यकता नहीं होती और इसी कारण इनकी ये इन्द्रियां बिल्कुल नदारत होती हैं।

पक्षियों को उड़ने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, इसलिए इनके शरीर का चयापचय, जिससे ऊर्जा उत्पन्न तथा प्रयोग की जाती है बहुत तेजी से कार्य करता है। इनके साँस लेने की गति बहुत ही अधिक होती है। उदाहरण के लिए एक साधारण नन्ही सी गौरय्या का हृदय एक मिनट में ५०० से भी अधिक बार धड़कता है।

प्र० : कैंसर रोग का इलाज अभी तक क्यों ढूंढ़ा नहीं जा सका है ?

उ० : पहला प्रश्न ये है कि कैंसर रोग वास्तव में क्या है ? वास्तव में इस क्रिया में शरीर के भीतर के कोशाणु बिना नियंत्रण बढ़ने लग जाते हैं तथा टिशु का बड़े से बड़ा गोला बना लेते है, इस प्रकार कैंसर शरीर के कोशाणुओं की अनियन्त्रित बढ़ोत्तरी तथा फैलाव होता है। कैंसर रोग शरीर के किसी भी प्रकार के कोशाणुओं में उभर सकता है। हमारे शरीर में भिन्न-भिन्न प्रकार के कोशाणु होते है और इसी कारण कैंसर भी भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। केवल मनुष्य में ही सैंकड़ों प्रकार के भिन्न कैंसर होते हैं तथा कैंसर को एक रोग न समझ कर, रोगों का एक विशाल परिवार जानना चाहिए। ये समस्या कैंसर रोग का उपचार तथा इसकी रोक-थाम के तरीके ढूंढ़ने में एक महत्त्वपूर्ण कठिनाई है।

एक तो कैंसर की समस्या का हल उसके उत्पन्न होने के कारणों का पता लगा कर किया जा सकता है। वैज्ञानिकों को ये भी पता लगाना चाहिये कि वास्तव में ये कर्मक साधारण कोशाणुओं को, कैंसर के कोशाणु उत्पन्न करने का कारण कैसे बनाते है। इस प्रकार ही वैज्ञानिक मानव जाति को इस भयानक रोग से बचाने की सम्भावना रख सकते हैं।

दूसरे महत्वपूर्ण तरीका है, कि उन कर्मकों को ढूंढ़ निकाला जाये, जो शरीर में कैंसर के कोशाणुओं को सफलतापूर्वक नष्ट कर दें, ठीक उसी प्रकार जैसे आधुनिक ऐन्टीबायोटिक बैक्टीरिया के अणुओं को नष्ट कर देती है। वैज्ञानिकों ने बहुत से ऐसे रसायनों का पता लगा लिया है जिनसे शरीर में कैंसर रोग होता है। सरकार द्वारा ऐसे रसायनों को खाद्य पदार्थों से अलग रखने तथा इन्हें अन्य सम्पर्क से भी अलग रखने के भिन्न उपाय किये गये हैं, ताकि इस भयानक रोग से बचा जा सके।

क्योंकि पशुओं में कैंसर रोग उत्पन्न होने में वायरस का काफी सम्बध है इस कारण वैज्ञानिकों का अनुमान है कि कई प्रकार के कैंसर मनुष्य में भी वायरस के कारण ही उत्पन्न होते है। परन्तु मानव शरीर में वायरस कैंसर कैसे उत्पन्न करता है, इसका अभी तक पता नहीं चल पाया है। इस प्रकार कैंसर रोग के कारणों को ढूंढ़ना भी एक अत्यन्त कठिन कार्य है, फिर भी इस दिशा में वैज्ञानिकों द्वारा काफी प्रगति की जा चुकी है। हो सकता है भविष्य में खोज के दौरान पता चले कि भिन्न प्रकार के कैंसर एक-दूसरे से बहुत कम मिलते है या फिर सब प्रकार के कर्मक एक समान कार्य करते हों ? परन्तु अभी तक पूर्ण रूप से कुछ भी निश्चय नहीं किया जा सका है।

सूचना

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

छातों के कुछ नये दीवाने डिजायन

जो बरसात के पानी को पीना चाहे उनके लिये विशेष नल धारी छतरी
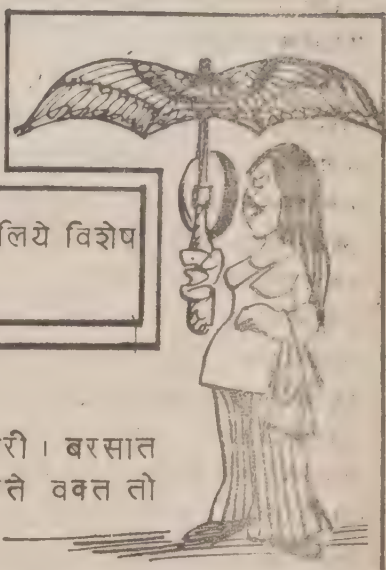
सुन्दरियों के लिये डंडी में शीशों वाली छतरी। बरसात में कहीं फंस गये तो अपनी सूरत निहारते वक्त तो आराम से कटेगा।
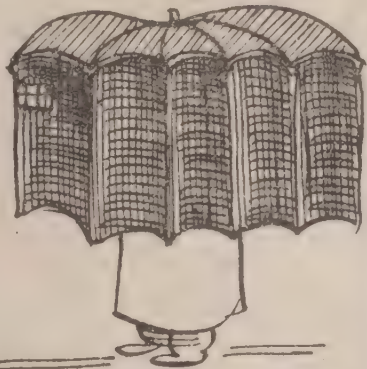
पर्दे वाली महिलाओं के लिये छाते का छाता और बुर्के का बुर्का।

रियरव्यू मिरर वाली छतरी जिसमें से छाता धारी पीछे से आते वाहनों पर नजर रख सकेगा और वक्त रहते ही कीचड़ के छींटों से अपना बचाव कर पायेगा—एक ओर हटकर।

जब तेज हवा चलती है तो छतरी उड़ने लगती है। ऐसे अवसरों के लिये डंडी के साथ हैंग ग्लाइडिंग उपकरण युक्त छतरी, ताकि हैंग ग्लाइडिंग का ही आनन्द लिया जा सके।

हाथ से हवा के जोर से छतरी उड़ ही गयी तो ऐसे मौकों के लिये डोरी युक्त छतरी जो पतंग बाजी का लुत्फ ही दे दे। भागते [illegible] की लंगोटी ही सही।

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि गरीबचन्द चूहा लापता हो जाता है। सिलबिल-पिलपिल को एक पत्र प्राप्त होता है जिससे पता लगता है कि गरीबचन्द का एक सुपर चूहे चिंचचिकोला ने अपहरण कर रखा है। चिंचचिकोला उन्हें या तो दस लाख रुपये देने या लड़कर गरीबचन्द को छुड़ा लेने की चुनौती देता है। लड़ने के लिए सिलबिल आगे आता है लेकिन भैंसे जैसे शरीर वाला चिंचचिकोला उसका मार-मार कर भुरकस निकाल देता है उससे आगे—
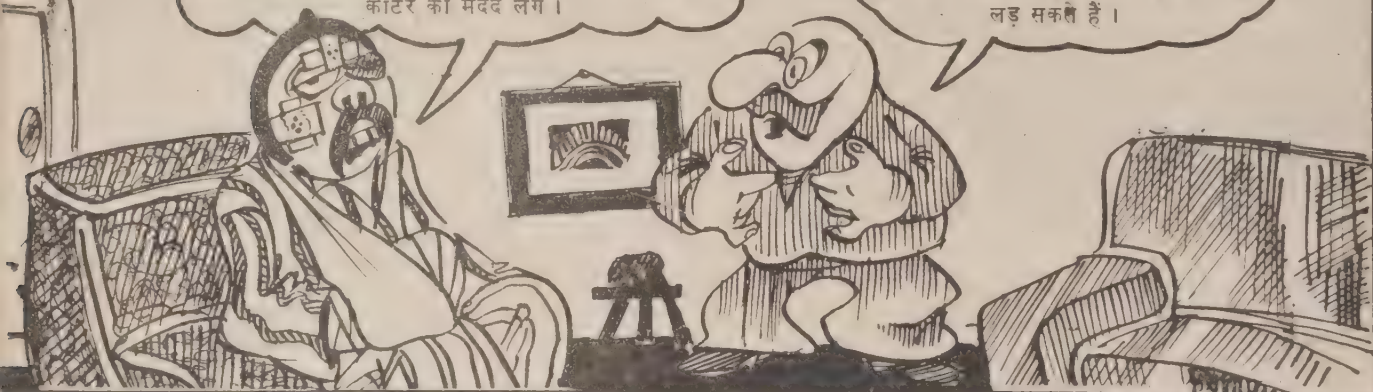
जाते ही न आव देखना न ताव, चिंचचिकोला से कहना हैंडस अप । उसे अंग्रेजी तो आती नहीं होगी, न ही उसे रिवाल्वर का पता होगा । वह हाथ नहीं उठायेगा, लड़ने के लिये आयेगा, बस तू रिवाल्वर चला देना । पूरी छः की छहों गोलियां दाग देना । उसकी छाती के आर-पार छः रोशनदान बन जायेंगे । वह कटे पेड़ की तरह नीचे गिर जायेगा, फिर हम उसकी छाती पर पैर रख फोटो खिंचवायेंगे ।
तड़
तड़तड़तड़तड़
हो हो हो । बेचारा चिंचिचिकोला, मेरे साथ ग्रीको रोमन कुश्ती करने के लिए तेल की मालिश करके कच्छा पहनकर तैयार बैठा होगा । बेचारे को क्या पता कि हम क्या तैयारी करके जा रहे हैं । जब मैं रिवाल्वर तानूंगा तो उसकी शक्ल देखने लायक होगी ।
तू उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों में मत आना । बस देखते ही रिवाल्वर तान देना ।
इब जा । मैंने जो-जो फार्मूले तुझे बताये हैं वह भूल न जाना । आज उसका हिसाब चुकता करना है ।
आइये, आइये, बास आपका बड़ी बेसब्री से वहीं पहली वाली जंगे पर इन्तजार कर रहे हैं । जल्दी जाइये । अकेले वह वहां बोर हो रहे होंगे ।
हियर मिस्टर चिचचिकोला । यू आर गन इज अप । तुम्हारा खेल खतम हो चुका है । तुम चुपचाप अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लो और चुपचाप खड़े रहना । जरा भी हिलने-डुलने की कोशिश की तो गोली सीने के पार हो जायेगी । तुम देख रहे हो मेरे हाथ में क्या है ? यह रिवाल्वर है । इसमें छः गोलियां हैं । हफ्ते में काम के छः दिन होते हैं इतवार की छुट्टी होती है इसीलिए इसमें सात गोलियां नहीं हैं । खड़े मुंह क्या देख रहे हो ?
रिवाल्वर ? मिक्स राऊड्स ?
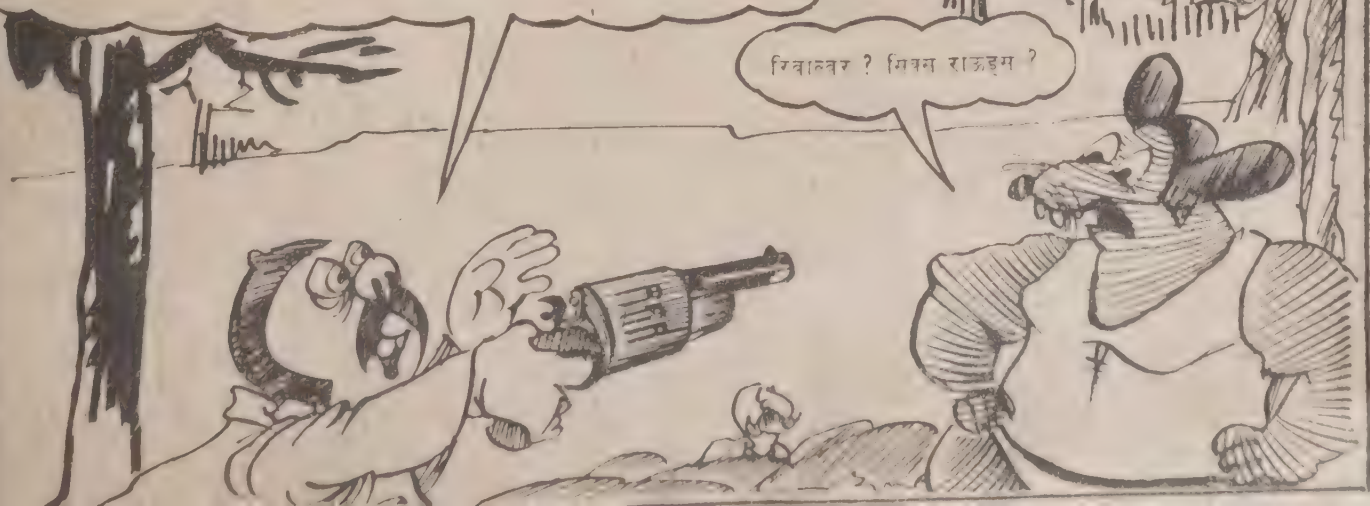
ओके मैन ! आई हैंडस अप । प्लीज डोंट शूट । गोली मत चलाना ! मेरे आठ छोटे-छोटे बच्चे हैं उनके कोई मामा भी नहीं है । सोचो उनका क्या होगा ? वह तो आपको ही अपना मामा समझते हैं । मैं मर गया तो उनकी देख भाल तुम्हें ही करनी पड़ेगी ।

अच्छा भाई हैंड्स अप किये आधा घंटा हो गया, आगे बताओ क्या करना है ?

आगे क्या करना है यही तो मुझे भी पता नहीं है । तुमने हमारी स्कीम का सत्यानाश कर दिया, चुपचाप अपने दोनों हाथ खड़े कर दिये । भाई जी ने बताया था यह हाथ खड़े नहीं करेगा और गोली चला देगा । यह नहीं बताया कि हाथ खड़े कर दिये तो क्या करना है ?

?
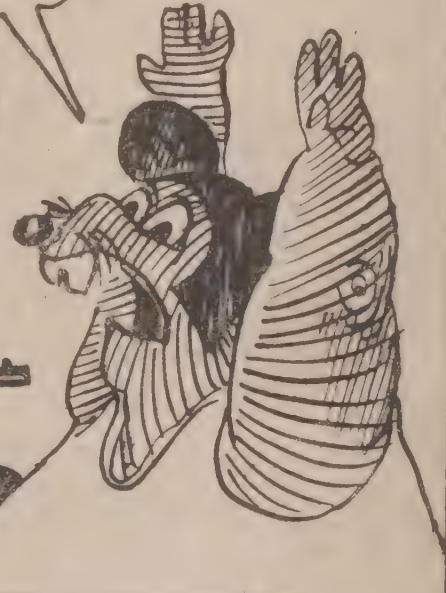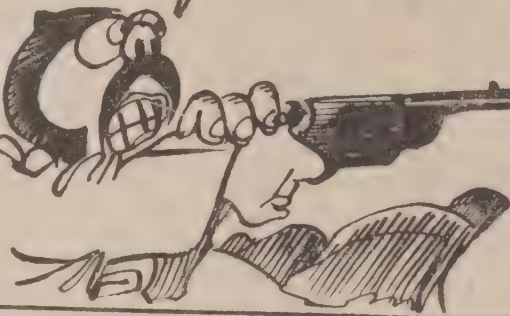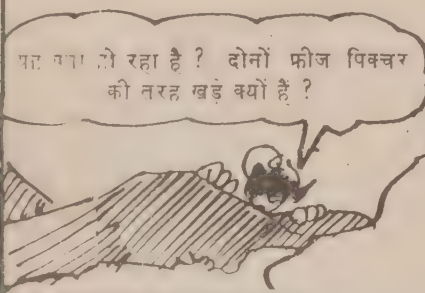
मैं अभी आया पांच मिनट में। गड़बड़ करने की कोशिश न करना वर्ना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। रिवाल्वर को इसी तरह पकड़े रहना। अगर चालाकी दिखाई तो गोली खोपड़ी के आर-पार होगी। तेरे दिमाग में चालाकी की बात आये तो खुद ही गोली चला देना। मैं तेरे भरोसे से ... कर जा रहा हूं। मैं आखिरी चेतावनी दे रहा हूं।

मैं इसी तरह खड़ा रहूंगा। अब क्या स्टाम्प पेपर पर लिख कर दूं ?

दस मिनट हो गये लेकिन उसका कोई पता नहीं है। मुझे क्या नौकर समझ रखा है जो इस तरह खुद ही पिस्तौल तानूं, खुद ही हाथ उठाये रखूं।

चमचे, जेल से गरीब चन्द चूहे को निकाल कर ले आ।

पिद्दी के शोरबे गरीब चन्द, मुझे तेरे आदमियों ने क्या गुलाम समझ रखा है ? यह ले पिस्तौल। तू तान कर खड़ा रह इसे मेरी तरफ समझा ?

मैं तो आज तक समझता था कि बेवकूफी में सिलबिल ही वर्ल्ड रिकार्ड तोड़ सकता है लेकिन यहां तो उसके भी उस्ताद मौजूद हैं। मैं अब यह मौका हाथ से नहीं जाने दूंगा। ऐसे मौके आते ही कब हैं।

मिस्टर चिचचिकोला अब आपका षडयन्त्र का काम खत्म हो चुका है। हम जा रहे हैं लेकिन पिस्तौल का निशाना तुम्हारी तरफ ही रहेगा। हमारा पीछा करने की कोशिश की तो धज्जियां उड़ाकर रख दूंगा। जब तक हम आंखों से ओझल न हो जायें तुम इसी प्रकार खड़े रहना।

मेरी समझ में अब तक यह नहीं आया कि यह ... आ क्या ? गरीब चन्द कैसे छूट गया ? इसके हाथ ... मेरी रिवाल्वर कहां से कैसे आई? रिवाल्वर तो मेरे हाथ ... था, चिच चिकोला ने जो इसे पकड़ रखा था। वह मेरी ... ही तो पकड़ रखा है। तो उसका हाथ मेरा हाथ समझो। हाथ-हाथ में तीसरा हाथ कैसे पहुंचा ?
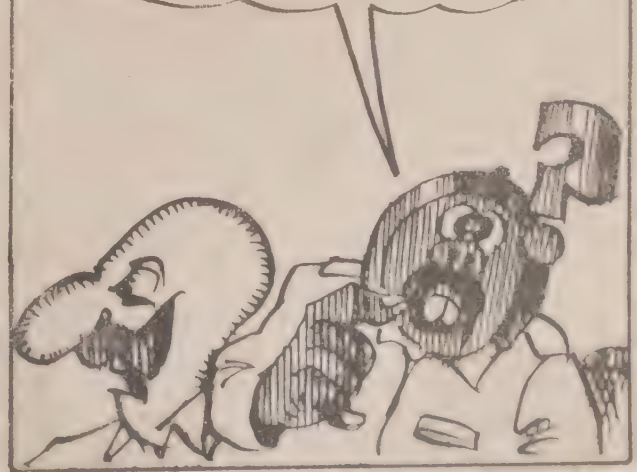
पिलपिल सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़ें।

लाटरी का टिकट

□ पुनीत श्रीवास्तव

हमारी आधी जिंदगी जाने ... की खत्म हो चुकी थी। श्रीमती जी और हमारे सिर के गुस्ताख तिनके हमें बीच में छोड़कर झड़ चुके थे। मैंने कभी लॉटरी नहीं खरीदी थी। दरअसल बात तो ये थी कि मुझे कभी विश्वास नही था लॉटरी पर। या यों कहिये कि अपनी किस्मत पर। उस दिन श्रीमती जी को जाने क्या बदहजमी हो गई थी सो बोलीं, 'एक लॉटरी का टिकट तो खरीदो शायद पहला इनाम मिल जाए।'

मैं समझ गया था कि श्रीमती जी का पेंच जरूर ढीला पड़ गया है। बुढ़ापे में सठिया गई है। मेरी पेंशन से ही गुजारा हो रहा था फिर इन्हें यह लॉटरी की क्या सूझ गई? भगवान न करे कभी लॉटरी निकले वरना इतने सारे रुपयों को देखकर इस बुढ़िया का दम जरूर निकल जाएगा। आगे खुद श्रीमती जी बोलीं, 'लॉटरी वाला चिल्ला-चिल्लाकर बता रहा था कि कालूराम को दस लाख का इनाम मिला था। उस वक्त मेरे पास पैसे नहीं थे वर्ना मैं भी टिकट खरीद लेती। मिसेज कुमार ने तो पूरे दस टिकट खरीदे हैं।'

'हूंह कालूराम को इनाम? पचास साल पहले उसका बाप हज्जाम था और आज भी वही है। यदि उसे इनाम मिला होता तो क्या वह बाल काटता? अरे लोग उसके बाल काटते। ये लॉटरी वाले भी कितना सच-झूठ बोलकर लोगों को फांसते हैं मैंने जरा तीखे अन्दाज में कहा तो श्रीमती जी थोड़ा नाराज हुई फिर बोलीं, 'तुम्हें तो हर आदमी झूठा नजर आता है। मैं कुछ नहीं सुनना चाहती हूँ। कल एक टिकट जरूर ले आना।'

श्रीमती जी का नादिरशाही हुक्म टालना मेरा स्वभाव नहीं है। मैं डरने जरूर लगा था कि बैठे-ठाले इन्हें क्या सनक सवार हो गई? कहीं भूत-प्रेत का चक्कर तो नहीं लग गया? यों श्रीमती जी कई बार ऐसी बातें कह देती थीं कि मुझे संदेह होने लगा था कि वे जब-तब आगरे पांजीशन में आ जाती हैं।

दूसरे दिन श्रीमती जी ने जबरदस्ती हमें बाजार दौड़ाया। सेन्टर से २५ लाख रुपये इनाम वाला टिकट खरीदा। घर लौटकर टिकट उनके हाथ में थमा दिया। उसे पाकर श्रीमती जी निहाल हो गई। पहले उन्होंने टिकट का गृह प्रवेश गंगाजल छिड़ककर अगरबत्ती जलाकर व हल्दी चन्दन के टीके से किया था। टिकट को वो पूजा के कमरे में रख आई थीं। मुझे बाहर खड़ा कर गई थीं। क्योंकि मैं रास्ते में कई मित्रों से दुआ-सलाम करता हुआ आया था। श्रीमती जी ने अन्दर से ही बाल्टी में पानी दे दिया और हिदायत दी, 'बाहर नहा लो फिर अंदर आना।'

मरता क्या न करता? पड़ोसी मुझे बाहर नहाते देखकर खी-खी करते हुये चले गये। टिकट के आते ही मैं इतना ना चीज हो गया था और टिकट पवित्र कि श्रीमती जी ने उसे गले से लगा लिया?

इसे भी हमने अपने पापों का फल समझा। नहा कर फुर्सत पाई थी कि श्रीमती जी ने गंगाजल लाकर छिड़क दिया और
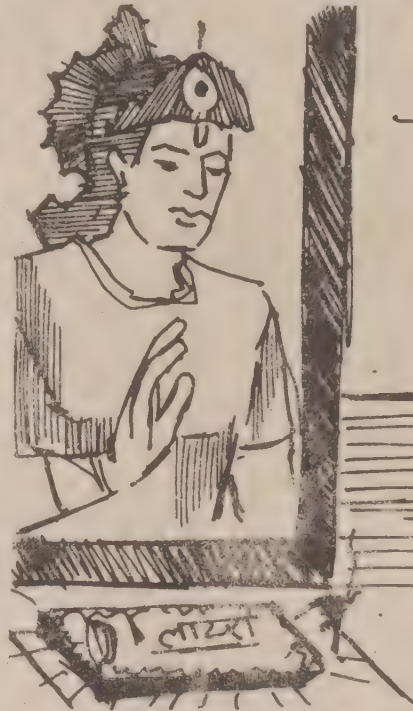
तुलसी की पत्ती खाने का आदेश दिया। चुपचाप उसे चबा गया तब श्रीमती ने मुझे अन्दर घुसने दिया; टिकट को श्रीमती जी ने कृष्ण-कन्हैया की मूर्ति के सामने रख छोड़ा था। मुझे भी कुछ-कुछ विश्वास लगने लगा था कि शायद मेरे नाम की लॉटरी जरूर निकलेगी। मन गुन-गुना उठा, 'मेरी सुन ले दीनदयाल, करदे मुझको मालामाल मेरी लॉटरी निकाल मुरली वाले नन्दलाल।'

इतना तो ठीक था। केवल टिकट खरीदने की परेशानी कुछ नहीं थी। उसके बाद जो सिलसिला शुरू हुआ था उससे मुझे ९५ प्रतिशत शक होने लगा था कि श्रीमती जी निश्चय ही सठिया गई है। ड्रा की तारीख एक हफ्ते दूर थी। एक दिन श्रीमती जी ने सुबह-सुबह उठाया और एक पर्ची पकड़ाते हुए कहा, 'जल्दी जाओ। किसी पण्डित को बुला लाओ और ये सामान खरीद लाओ। सत्य नारायण जी की कथा करायेंगे।

जरूर श्रीमती जी इसलिए कथा करा रही हैं शायद कथा सुनकर भगवान प्रसन्न हो जाए और इनाम मिल जाए। अब श्रीमती जी को कौन समझाए कि भगवान को प्रसन्न न करो बल्कि उस डिब्बे का ध्यान करो जिसमें लॉटरी के टिकटों को मिला कर घुमाया जाता है। जैसे-तैसे पण्डित का पता लगाया। पण्डित जी बोले, 'भाई मैं दो, केवल दो शिफ्ट करता हूँ। लेकिन तुम मान नहीं रहे हो तो चलो टाइम निकालकर आ जाऊँगा पर मेरा पारिश्रमिक डबल हो जाएगा तुम एडवांस में कुछ देते जाओ।'

ऐसे माडर्न पण्डित को देखकर मैंने माथा ठोंक लिया। पर जरूरी था इसलिए दस बजे का टाइम देकर कुछ एडवांस देकर उनसे बिदा लेकर बाजार पहुँचा। हवन और पूजा की सामग्री खरीदी फिर घर की ओर मार्च किया। श्रीमती जी ने एक काम कर लिया था सारे मुहल्ला-पड़ोस में खबर करवा दी थी कि सत्य नारायण की कथा है।

श्रीमती जी ने एक कमरा खाली करवा लिया था। धीरे-धीरे पड़ोसी जमा होने लगे थे। छोटे-छोटे नाक बहाते हुए बच्चे भी प्रसाद के लालच मे जमा हो रहे थे। घर के सामने पड़ोस के आवारा और बदचलन कुत्ते भी इकट्ठा हो गये थे। शायद कथा के अंश सुनकर उनके पाप धुल जायें। मैं समझ गया था कि ये चटोरे कुत्ते भी 'कुछ' पाने की इच्छा लिए बैठे थे।

नारियां एकत्र हो गई थीं और उनकी खुद की कथा शुरू हो गई थी। पंडित जी बारह बजे स्कूटर में आये। मुझसे क्षमा मांगते हुए बोले, 'आई एम सॉरी। आज काफी व्यस्त रहने के कारण देर हो गई। मैं केवल दस मिनट दे सकता हूँ आपको।'

'दस मिनट? दस मिनट में तो आप हवन भी नहीं कर पायेंगे।' मैंने कहा तो पण्डित जी बोले, 'गॉड ब्लेस यू माई सन। सब हो जाएगा।'

'पण्डित जी को कमरे में लाया। महिलाओं ने पण्डित जी को प्रणाम किया। पण्डित जी ने टेप रिकार्डर निकाला और बजा दिया। कथा चालू हो गई थी। हवन का पूरा सामान उन्होंने एक साथ अग्नि कुंड में पटक दिया। कमरा धुंआ से भर गया था। पण्डित जी दो घंटे की कथा को छोड़-छोड़कर टेप किया था जैसे कोई सिनेमा वाली रील काट-काटकर सिनेमा दिखाता है। महिलाओं के चेहरे पर खुशी थी। श्रीमती जी तो बलि-बलि जा रही थी सबसे ज्यादा बच्चे खुश थे चलो जल्दी प्रसाद मिलेगा। मैं दरवाजे पर खड़ा मुन्नु को देख रहा था जो मेरी नई और कीमती कालीन में बार-बार नाक पोंछ रहा था। राजू तो धुंये के कारण रो रहा था पर प्रसाद का लालच उसे अभी तक खड़ा किये था। नन्हे गिट्टू ने मेरे कालीन को टॉयलट समझकर गीला कर दिया था। मेरा कलेजा फटने लगा था। श्रीमती जी पर गुस्सा आ रहा था, 'ये औरतें जो न करवायें वह कम ही है।'

पण्डित जी का टेप रिकार्डर कथा समाप्त कर चुका था। उन्होंने बाकी पारिश्रमिक लेकर बिदा ली। पड़ोसी प्रसाद लेकर चलते बने। श्रीमती जी बहुत खुश थी मानो इनाम मिलने की मुहर लगवा ली हो कथा सुनकर।

घर को ठीक-ठाक करने में तीन दिन लग गये थे। श्रीमती जी उतावली होती जा रही थीं। मेरी जेब खाली हो चुकी थी। पेंशन बीच महीने खत्म हो गई थी इसलिए बैंक से कुछ पैसा निकाल लिया था। टिकट को श्रीमती जी कन्हैया की मूर्ति के सामने ही रखती थीं। दिन में पचासों बार देख लेती थीं कि टिकट मौजूद है कि नहीं।

उनकी ये हरकतें मुझे चिन्ता में डाले दे रही थीं। लॉटरी हमारे नाम खुली तो यह बुढ़िया सुनकर मर जाएगी और यदि न खुली...न खुली, तो भी मर जाएगी। एक रात मैं और श्रीमती सो रहे थे। श्रीमती जी की आवाज सुनकर मेरी नींद उचट गई। देखा श्रीमती जी सो रही हैं। शायद सपने में बड़बड़ा रही थी, 'पच्चीस लाख...कार, फ्रिज...सब आ जायेगा। अरे...अरे तू चोर है। चोर...चोर।'

श्रीमती जो जोर से चिल्ला पड़ीं तो मेरा दिल ऊपर आ गया। उन्हें हिलाया तो वो खुमारी में बोलीं, 'चोर...चोर। पच्चीस लाख ले गया।'

वे उठकर बॉलकनी की ओर भागीं। वे बोलीं, 'इधर भागा है चोर। चोर ऽऽ ऽ...पच्चीस लाख ले गया।'

मैंने दौड़कर श्रीमती जी का मुंह दबा लिया। अपने पास पच्चीस लाख क्या दो लाख से ज्यादा नहीं हैं। कहीं बगल वाले इन्कम टैक्स आफिसर ने सुन लिया तो बेकार रोज छापे डालने लगेगा। उससे हमारे सम्बन्ध वैसे ही अच्छे नहीं थे। अब तक श्रीमती होश में आ चुकी थीं। परन्तु चोर-चोर की आवाजें सुनकर पड़ोसी जाग कर ऊपर आ गये। किसी ने पुलिस को टेलीफोन कर दिया था इसलिए पूरा स्टाफ

आ धमका। अब यह तो नहीं कह सकता था कि श्रीमती जी ने सपना देखा था। कह दिया कि चोर आया था पर भाग गया। जैसे तैसे सबको चलता किया। श्रीमती जी के चेहरे पर सन्तोष था कि पच्चीस लाख रुपये चोरी गए वे भी केवल सपने में। सारी रात न तो श्रीमती जी सोई न ही मुझे सोने दिया। मुझे गुस्सा आ रहा था उस मनहूस घड़ी पर जिस घड़ी मे श्रीमती जी के ऊपर लॉटरी का फितूर सवार हुआ था।

श्रीमती जी की इन्हीं हरकतों से गुजरते हुए ड्रा की तिथि आ गई थी। उस दिन श्रीमती जी ने चार बजे सुबह ही उठा दिया और बोलीं अखबार ले आइये।

'इतनी सुबह?'

'हाँ। वरना सभी अखबार पहले ही बिक जायेंगे।' श्रीमती जी ने दलील दी। मन ही मन कोसता हुआ स्टेशन जा पहुँचा। हमारे कस्बे में ट्रेन से ही अखबार आते हैं। ट्रेन तीन घंटे लेट थी। इसलिए प्लेट फार्म पर ही उबासी लिए घूमता रहा। सात बजे ट्रेन आई। आठ बजे पेपर लेकर घर लौटा।

घर में श्रीमती जी ने कुहराम मचा रखा था। श्रीमती जी महरी पर बरस रही थीं। श्रीमती जी को लॉटरी का टिकट नहीं मिल रहा था। महरी बार-बार कह रही थी, 'मालकिन, हमने नहीं उठाया टिकट।'

'तूने नहीं उठाया तो क्या भूत ले गया? या उसके पैर उग आये जो चलता बना?' श्रीमती जी दहाड़ीं तो महरी रोती हुई बाहर चली गई।

मैंने श्रीमती जी से कहा, 'देखो कहीं उसने सफाई करते वक्त टिकट भी कचरेदान में डाल दिया हो।'

सुनने को देर थी कि श्रीमती जी लपककर कचरेदान से ढूंढ़कर टिकट निकाल लाईं वे इस उम्र में भी बच्चों जैसी प्रसन्न दिखाई दे रही थीं।

श्रीमती जी ने टिकट पर गंगाजल छिड़क मुझे नहाने का आदेश दिया। नहा धोकर श्रीमती जी ने टिकट की एक घण्टे तक पूजा की। फिर मुझसे नम्बर मिलाने को कहा। अपने सीरिज का नम्बर पेपर में देखा तो मैं भी चौंक गया। मैं खुश हो गया और चिल्लाया, 'आ गया, आ गया।'

श्रीमती जी ने सुना तो खुशी से झूम कर कत्थक करने लगीं। फिर बोलीं,—'पच्चीस लाख हमारे हो गये।'

तब मैंने फिर पेपर देखा तो श्रीमती जी का डांस रुक गया। बोलीं, 'क्या हुआ?'

मैंने कहा, 'इनाम केवल सौ रुपये का मिलेगा।'

सुनते ही श्रीमती जी चारों खाने चित हो गई। लगभग सौ किलो की श्रीमती जी को सम्भालना। मुझे लगा कि बुढ़िया अब चल बसेगी। टैक्सी में लादकर डा० खन्ना के पास ले गया। श्रीमती जी को हाई ब्लड प्रेशर हो गया था।

एक हफ्ते बाद वे ठीक हुईं। चेहरे की लालिमा उतर चुकी थी। वे काफी दिनों उदास रही थीं। कभी-कभी मैं उन्हें अक्सर रोते देखा करता था। तब मुझे इस सनकी बुढ़िया से काफी सहानुभूति हो आती थी।

मैं प्रण कर चुका था कभी लॉटरी नहीं खरीदूंगा। इस चक्कर में मेरी जेब भी खाली हो चुकी थी और महरी के चले जाने के कारण श्रीमती जी ही बर्तन घिसा करती थीं। ●

मास्को ओलम्पिक १९८०

खेल तथा स्वर्ण पदकों की संख्या

क्रम संख्या	प्रतियोगिता	स्वर्णपदक पुरुष	स्वर्णपदक महिला	योग
१.	बास्केटबॉल	१	१	२
२.	बॉक्सिंग	११	..	११
३.	कुश्ती:फ्री स्टाइल	१०	..	१०
	ग्रीको रोमन	१०	..	१०
४.	साइक्लिंग	६	..	६
५.	वॉलीबॉल	१	१	२
६.	जिमनास्टिक	८	६	१४
७.	रोइंग	८	६	१४
८.	फेंसिंग	९	२	११
९.	जूडो	८	..	८
१०.	घुड़सवारी	६	..	६
११.	एथलेटिक्स	२४	१४	३८
१२.	याटिंग (सेलिंग)	६	..	६
१३.	तैराकी	१३	१३	२६
	डाइविंग	२	२	४
	वाटरपोलो	१	..	१
१४.	हैंडबॉल	१	१	२
१५.	तीरंदाजी	१	१	२
१६.	शूटिंग	७	..	७
१७.	भारोतोलन	१०	..	१०
१८.	फेंसिंग	८	..	८
१९.	फुटबॉल	१	..	१
२०.	हॉकी	१	१	२
२१.	मॉडर्न	२	..	२
	योग	१५५	४८	२०३

टेस्ट क्रिकेट में

नब्बे का चक्कर

इंगलैंड वेस्टइंडीज श्रृंखला से पहले तक खेले गये ८७९ टेस्टों में ३४१ बार बैट्समैन नब्बे की संख्या तक पहुंच शतक बनाने से वंचित रहे। इनमें से वे तो बहुत भाग्यहीन रहे जो प्रथम टैस्ट में नब्बे या उससे ऊपर परन्तु शतक से पहले आऊट हो गये। अभागे टैस्ट बैटस मैनों की सूची यहां पेश है।

रन	नाम खिलाड़ी	देश	विरुद्ध		सन	कैसे आऊट हुआ
९१	एफ एस जैकसन	इंग्लैंड	आस्ट्रेलिया	(लार्ड्स)	१८९३	कॉट
९७	एल जे टैंकरेड	द० अफ्रीका	आस्ट्रेलिया	(जोहेसबर्ग)	१९०२-०३	कॉट
९०	आर बी मिनेट	आस्ट्रेलिया	इंग्लैंड	(सिडनी)	१९११-१२	कॉट
९८	ए जे रिचर्डसन	आस्ट्रेलिया	इंग्लैंड	(सिडनी)	१९२४-२५	कॉट
९९	ए जी चिपर फील्ड	आस्ट्रेलिया	इंग्लैंड	(नाटिंघम)	१९३४	कॉट
९३	पी ए० गिब	इंग्लैंड	द० अफ्रीका	(जोहेन्स बर्ग)	१९३८-३९	कॉट
९६	वी एच स्टॉलमीयर	वे० इण्डीज	इंग्लैंड	(ओवल)	१९३९	स्टम्प
९९	आर जे क्रिस्टीयानी	वे० इण्डीज	इंग्लंग	(ब्रिजटाऊन)	१९४७-४८	एल.बी. डब्ल्यू.
९७	फ्रैंक वॉरेल	वे० इण्डीज	इंग्लैंड	(पोर्ट आफ स्पेन)	१९४७-४८	कॉट
९०	एफ मैनसेल	द० अफ्रीका	इंग्लैंड	(लीडस)	१९५१	कॉट
९४	जे० के० होल्ट	वे० इण्डीज	इंग्लैंड	(किंगस्टन)	१९५३-५४	एल. बी. डब्ल्यू.
९३	एन एस हार्फोर्ड	न्यूजीलैंड	पाक	(लाहौर)	१९५५-५६	कॉट
९७	इयन रेडपाथ	आस्ट्रेलिया	द० अफ्रीका	(मेलबोर्न)	१९६३-६४	बोल्ड
९५	अब्दुल कादिर	पाकिस्तान	आस्ट्रेलिया	(कराची)	१९६४-६५	रन आऊट
९४	सी०मिलबर्न	इंग्लैंड	वे० इण्डीज	(मचेस्टर)	१९६६	बोल्ड
९०	बी०वुड	इंग्लैंड	आस्ट्रेलिया	(ओवल)	१९७२	एल.बी. डब्ल्यू.
९३	गॉर्डन ग्रीनिज	वे० इण्डीज	भारत	(बंगलौर)	१९७४-७५	रन आऊट
९२	आर डब्ल्यू एन्डरसन	न्यूजीलैंड	पाक	(लाहौर)	१९७६-७७	कॉट
९२	बी० एम० लेयर्ड	आस्ट्रेलिया	वे० इण्डीज	(ब्रिस्बेन)	१९७९-८०	कॉट
९०	तसलीम आरिफ	पाकिस्तान	भारत	(कलकत्ता)	१९७९-८०	कॉट

पति-पत्नी बिस्तर में लेटे तो पत्नी को शंका हुई, 'ऐजी, तुम ड्राइंग रूम की बत्ती जलती तो नहीं छोड़ आये?'

[illegible] ने उठकर जाकर देखा। बत्ती बन्द थी।

लेटे हुए कुछ देर हुई थी कि वह फिर बोली, [illegible] नहीं मैंने गैस खुला तो नहीं छोड़ [illegible]?'

[illegible] को फिर जाकर देखना पड़ा।

तीसरी बार श्रीमती जी ने कहा, 'ऐजी 'मुझे ऐसा लगता है कि स्टोर की खिड़की खुली छोड़ गये हम। आजकल चोरों का डर है।' स्टोर की खिड़की भी बन्द थी।

अब भी वह संतुष्ट न थी। कुछ देर बाद बोली, 'तुमने लॉन वाला नलका बन्द तो कर दिया था। यह टप टप की सी आवाज कैसी आ रही है?'

पति देव ने झल्ला कर कहा, 'अब सो जाओ। तुम चिन्ता न करो घर में तुम्हारे मुंह के इलावा और सब कुछ बन्द है।'

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल–पहला इनाम ३० रु.
कैमल–दूसरा इनाम २० रु.
कैमल–तीसरा इनाम १० रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... **उम्र** ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: १५ सितम्बर १९८०

CONTEST NO.15

VISION
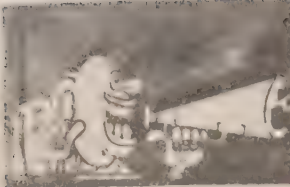
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

दयाणी चेतन—उल्हासनगर : चाचा जी, घर का दरवाजा अंदर की ओर खुलता है। दुकान का दरवाजा बाहर की ओर खुलता है तो दिल का दरवाजा किस ओर खुलता है?

उ० : कभी माल खाने की ओर, कभी दवा-खाने की ओर, कभी कैद खाने की ओर। और अगर किस्मत अच्छी हो तो पहले जच्चाखाने की ओर और फिर पागल खाने की ओर।

कल्पना प्रधान—सिड्डन : मैं दीवाना बड़े चाव से पढ़ती हूं। पर यह देख कर दुख होता है कि आप फ्रेंडस क्लब में लड़कियों के फोटो प्रकाशित नहीं करते। इसका क्या कारण है?

उ० : लड़के लड़कियों को उलटे-सीधे अश्लील पत्र लिख कर 'नेक नाम' कमाते हैं और बदनामी हमारी होती है।

...श कुमार बुधवानी—रायपुर : चाचा जी, दौलत के लिए प्यार की बलि चढ़ाने वाले को आप क्या कहेंगे?

उ० : अकलमन्द बेवकूफ।

मोहन मिश्रा—सिलीगुड़ी : दौलत कहाँ सिर झुका देती है?

उ० : जहाँ फिल्म मुगलेआजम में शहंशाह अकबर ने झुकाया था।

एस० एम० आलमगीर—हजारीबाग : डीयर अंकल, क्या यह सत्य है कि आजकल लोग अपने स्वार्थ के लिए दोस्ती करते हैं?

उ० : जहाँ तक इस स्वार्थ का सम्बंध है, कि आप की जेब का एक रुपया हर सप्ताह हमारी जेब में आता रहे, यह सत्य है।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : चाचा जी, क्या कभी गधों ने भारत पर शासन किया है?

उ० : इस प्रश्न के उत्तर में आप ही हमें बता दें कि राजनीति में भाग लेने से पहले क्या आप के लिये यह जानना जरूरी है?

विनोद सुजान—शाहादरा : आपकी बातों से ऐसा लगता है कि आप से बड़ा शांतिप्रिय इन्सान दुनिया में नहीं है।

उ० : शांतिप्रिय की बात छोड़िये, 'इन्सान ही नहीं' कहिये।

सुनील चक—इलाहाबाद : चाचा जी, हम आप के दीवाने हैं, तो आप किसके दीवाने हैं?

उ० : इसके लिए एक शेर अर्ज है :

दूर दूर तक फैले ये, हम दोनों के अफसाने,
दीवाने जिस शमां के तुम, उस शमां के हम परवाने है।

बजरंग शर्मा—श्रीगंगानगर : क्या चार दिन की जिन्दगी एक ख्वाब है?

उ० : इसके लिए शायरों ने अलग-अलग ख्याल जाहिर किये हैं :

> जिन्दगी और जिन्दगी की यादगार,
> पर्दा और पर्दे पे कुछ परछाईयाँ,
> ये माना जिन्दगी है चार दिन की,
> बहुत होते हैं यारो चार दिन भी,
> इक फुर्सते गुनाह मिली वो भी चार दिन,
> देखे हैं हमने हौंसले परवरदिगार के।
> जिन्दगी है, या कोई तूफान है,
> हम तो इस जीने के हाथों पर चले

विनोद पुरी, 'रंजू'—लुधियाना : मजबूरी इन्सान को क्या बना देती है?

उ० : भारत की जनता ने श्रीमती इन्दिरा गाँधी को प्रधानमंत्री बनने के लिए मजबूर किया और वह प्रधानमंत्री बन गईं।
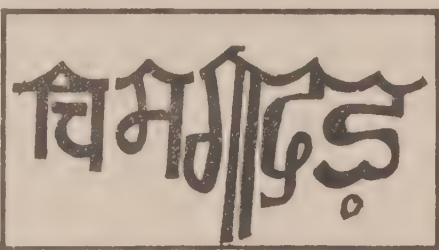
राधे श्याम गुप्ता—नई दिल्ली : लोग बदतमीजी में पता नहीं आपको कितना बुरा भला कह जाते हैं, क्या आप को उन पर गुस्सा नहीं आता?

उ० : गुस्सा हमें ऐसी तारीफ पर आता है जिसके लिए दीवार से सर फोड़ने को जी चाहता है। कल ही की बात है, हमारे पड़ोसी के लड़के ने हमारी शान में पता नहीं क्या ऊल-जलूल बक दिया और हमें दो चार गालियाँ भी दे डालीं। शाम को उसके डैडी जी हमारे पास आये और अपने बेटे की हरकत पर हम से माफी माँगने लगे। हमने सद्भाव पूर्वक उनसे कहा, 'जाने दीजिए भाई साहब! बच्चा ही तो है। हमने उसे अपना बच्चा समझ कर माफ कर दिया है।' इस पर उसके डैडी जी बोले, 'आपने अपना बच्चा समझ कर उसे माफ कर दिया है तो अलग बात है। वर्ना वह गधे का बच्चा माफी के काबिल है ही नहीं।'

भँवर सिंह शेखावत—खुडानियाँ : चाचा जी, बताइये आप इस बातूनी दुनिया में क्यों आये हैं?

उ० : दुनिया के गमों की खाट खड़ी करने के लिए।

रवीन्द्र नाथ सरीन—लुधियाना : नारी की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?

उ० : कमजोरी तो कोई छोटी सी भी नहीं है। सबसे बड़ी ताकत है उसके आंसू।

कृष्ण अग्रवाल—बम्बई : चाचा जी, मैं क्या करूं मुझे खाने के बाद भूख नहीं लगती?

उ० : चिंता न कीजिये। गालियां खाने के के बाद अक्सर ऐसा ही होता है।

रमिन्दर सिंह डिम्पा—लुधियाना : आप की शक्ल देखकर लगता है आप के परिवार की जनसंख्या बहुत अधिक है।

उ० : अनुमान ठीक लगाया है आपने। सारा देश हमारा परिवार है।

हरीश "केटी"—जबलपुर : एक लड़की आप से शादी करना चाहती है। क्या मैं आपकी ओर से उससे हां कर दूं।

उ० : हमारी हालत धर्मेन्द्र और हेमा मालिनी जैसी होती तो हम जरूर हां कर देते। धर्मेन्द्र की पत्नी लंदन में रहती है। और हमारी पत्नी लंदन तो क्या जबलपुर तक जाने को तैयार नहीं है।

मुकेश भटनागर, "निराला"—किला चित्तौड़ गढ़ : डीयर अंकल, एक लड़की मुझे देख कर हंसती है। बताइये क्या करूं?

उ० : अगर रोने में आपको कोई खास तकलीफ न हो, तो आईने में अपनी सूरत देखिए।

चन्द्रभान अनाड़ी—जबलपुर : मैं सोच रहा हूं जड़ें अक्ल की नोच रहा हूं। आप कौन सी दवा का मर्ज हैं?

उ० : दवा का नाम है मनोरंजन, मर्ज का नाम है बातूनी और मरीज का नाम है अनाड़ी।

जयनारायण लिम्बा—जोधपुर : आजकल आप किस पार्टी की ओर हैं?

उ० : किसी की ओर भी नहीं। सोच रहे हैं हम अपनी अलग एक पार्टी क्यों न बना लें। और उसका नाम रखें अखिल भारतीय दीवानी कांग्रेस पार्टी।

मधु सुदन, सत्यानारायण पांडे—आजमगढ़ : चाचा जी, यदि आपके चार दांत एक साथ टूट जायें, तो क्या आप प्रश्नों के उत्तर देना बन्द कर देंगे?

उ० : दांतों से उत्तर देने का क्या सम्बन्ध है? चारों हाथ-पांव टूट जायें प्रश्नों के उत्तर हम तब भी देंगे।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सवाल यह है ?

क्या इनका कोई जवाब है ?

एक कुत्ते का बच्चा तीर कमान के निशाने का कमाल देख रहा है ।
तीर अन्दाजी के इस अन्दाज पर आप को हंसी न आई तो हमें रोना आ जाएगा ।
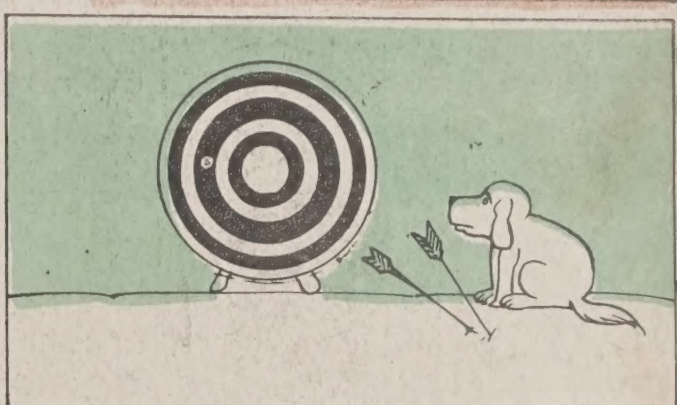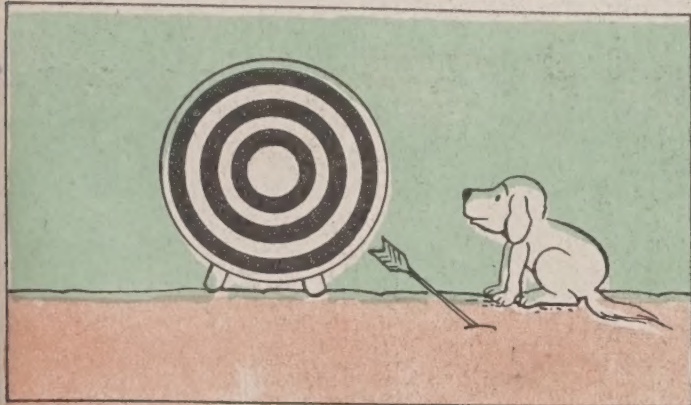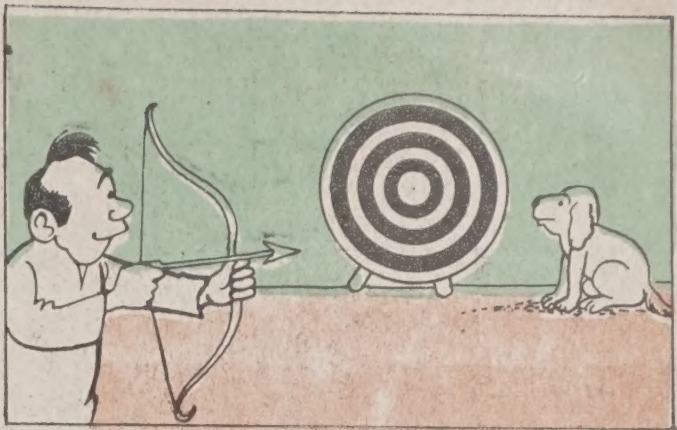
शेष १८ का
करती कार। मुझे तो डर लगता है। क्यों न इस पचड़े से पीछा छुड़ाया जाये ?'

'हम से पीछा छुड़ाये नहीं छुटेगा।' राजू कुछ सोचते हुये बोला, 'हमारे पास एक बिना सुलझी गुत्थी है। हमारे अन्दर छिपा जासूस बगैर पहेली हल किये कैसे पीछा छूटने देगा ?'

बेताल को अलविदा

घर पहुंचे तो श्याम वहां मौजूद था। उन्होंने श्याम को सारा किस्सा बताया। राजू ने सुझाया, 'बंजारिन रानी के अनुसार कोई खजाना या नोट गायब हो गये हैं ! उनके गायब होने और अलीबाबा के गायब होने में कुछ सम्बन्ध होना चाहिये।'

श्याम बोला, 'हो सकता है अली-बाबा खजाना लेकर कहीं चला गया हो और मजे कर रहा हो।'

'नहीं।' राजू ने सिर हिला कर असह-मति प्रकट की, 'बंजारिन रानी ने साफ बताया कि अलीबाबा को हमारी मदद की जरूरत है। अगर खजाना लेकर गायब हुआ होता तो उसे हमारी सहायता की जरुरत न पड़ती शायद उसे उस खजाने के कारण ही गायब होना पड़ा हो।'

महिन्दर ने अपना मत व्यक्ति किया, 'हो सकता है अलीबाबा ने सन्दूक में नोट छुपाये हों और बदमाशों के गैंग उसके पीछे पड़ गये हों और उनसे बचने के लिये वह संदूक छोड़ कहीं अंतर्ध्यान हो गया हो।'

'लेकिन वह संदूक में खजाना क्यों छोड़ जाएगा ?' राजू ने प्रश्न किया, 'मान लो इसमें छोड़ गया तो चलो देखते हैं।'

आधे घंटे में उन्होंने सन्दूक की एक-एक वस्तु निकाल कर जांचली और कोना-कोना छान मारा। उन्हें कुछ भी नहीं मिला।

'इसमें कुछ नहीं मिलेगा।' महिन्दर ने ठण्डी सांस छोड़ी। संदूक के अन्दर नीचे चारों ओर कपड़े की पट्टी चढ़ी थी। एक फटी जगह अंगुली डाल राजू ने इधर-उधर चलायी। अचानक राजू का चेहरा चमक उठा, 'यहां कुछ है। कागज़ ! शायद नोट हों।'

सावधानी पूर्वक उसने वह कागज बाहर निकाला।

'अरे नोट नहीं ! यह तो एक पुराना लैटर है।'

राजू ने उसे जांचते हुये फरमाया, 'हां ...यह अलीबाबा को ही लिखा गया है ! एक साल पुरानी डेट है लगभग एक वर्ष पहले ही अलीबाबा गायब हो गया था। पत्र मिलने के बाद उसने इसे सन्दूक में ऐसी गुप्त जगह छिपाया साफ अर्थ है कि वह इसे बहुत महत्वपूर्ण समझता था।'

महिन्दर ने सलाह दी, 'रानी जिस खजाने की बात कर रही थी शायद उस पहेली का यह महत्वपूर्ण सूत्र है। इसमें कहीं नक्शा वगैरह तो नहीं बना।'

तीनों निकट सिमट आये ! राजू ने लिफाफ में से पत्र खींच निकाला एक छोटा सा पत्र था ! पत्र यों था !

ओल्ड वाल जेल हस्पताल,
इंगलैंड
मार्च १२.

प्यारे दोस्त,

पुराने जेल के साथी की ओर से नमस्कार, मैं यहां हस्पताल में हूं। लगता है ज्यादा दिन नहीं जीऊंगा।

शायद चार दिन जिऊं, या दो सप्ताह या दो महीने ! बस ! डाक्टरों को उम्मीद नहीं है। अलविदा कहने का समय है।

अगर तुम दिल्ली में हो तो मेरी भतीजी झिलमिल से मिलना ! मेरा सलाम कहना। इससे ज्यादा कुछ नहीं लिख सकता। उम्मीद है क्रिकेट का शौक अब भी तुम्हें होगा ! उसे बनाये रखना।

तुम्हारा दोस्त,
जग्गी !

'यह तो एक आम चिट्ठी है।' श्याम बोला, जेल के साथी की ओर से। जब तुम दोनों यहां से गये हुये थे तो संवाददाता सुरेश ने फोन किया था संदूक के बारे में कि वह मिला या नहीं। उसने यह भी सूचना दी थी कि अलीबाबा कुछ वर्ष पहले यहां धंधा ठीक न चलने के कारण इंगलैंड गया था किसी तरह तिकड़म लड़ा कर ! उसका ख्याल था कि वहां जादूगरी की कला के लिये मौके हैं लेकिन उसकी आशा झूठी साबित हुयी। एक दिन अलीबाबा स्पेंसर जनरल स्टोर से कुछ चुराने के जुर्म में दो महीने की जेल चला गया ! जेल की सजा पूरी होते ही उसे इंगलैंड से निष्कासित कर दिया गया ! तब से वह छोटे-मोटे शो कर किसी तरह गुजारा चला रहा था ! उसी जेल यात्रा के दौरान वहीं जग्गी से उसकी मुलाकात हुयी होगी।'

महिन्दर का ख्याल कुछ और था, लेकिन भई अगर यह पत्र कुछ अर्थ नहीं रखता तो इसे इस प्रकार सावधानी से छुपा कर रखने में क्या तुक है।'

'यही तो मैं भी कहता हूं।' राजू बोला, 'उसने छुपाया क्यों यह पत्र ? इसे वह किसी कारण बहुत महत्वपूर्ण मानता था।'

श्याम ने अपना सिर खुजाया, 'इसमें खजाने के बारे में तो कुछ भी नहीं लिखा है।'

'यह जग्गी महाशय जल के अ[illegible] में थे जब उन्होंने पत्र लिखा है।' म[illegible] ने कहा, 'जेल से भेजी जाने वाली चि[illegible] अधिकारी गण सेंसर करते हैं। फिर [illegible] आने वाले विदेशी पत्रों का भी सेंसर [illegible] है इसीलिये जग्गी पत्र में खजाने के [illegible] कुछ साफ-साफ नहीं लिख सकता था।

'लेकिन उसने किसी तरह इस[illegible] द्वारा कुछ भेद बताने की कोशिश जरूर [illegible] है' राजू का मत था !

'अदृश्य स्याही जैसी चीज ?' श्याम[illegible] पूछा !

'हो सकता है ! चलो इस पत्र [illegible] जांच करें। राजू ने उत्तर दिया।

पहले उन्होंने आतशी शीशे से [illegible] अच्छी तरह देखा कोई परिणाम न निकल[illegible] उनके पास दो तीन शीशियां तेजाब की [illegible] थीं ! ट्यूब में तेजाब डाल धुंए के बुल[illegible] पर कागज को घुमाया गया ! उससे [illegible] कुछ नहीं हुआ ! कुछ कीमियाई द्रव का[illegible] पर वैसे तो दिखाई नहीं देते गरम करने [illegible] उभर आते हैं ? मोमबत्ती के निकट [illegible] जाकर गरम करने पर भी कोई बात [illegible] बनी ! लिफाफे की भी पूरी इसी प्र[illegible] जांच कर ली गयी।

निराश स्वर में राजू ने फैसला कि[illegible] 'गुप्त लिखाई भी नहीं है फिर इस साधा[illegible] पत्र को अलीबाबा ने इतना महत्व [illegible] दिया ?'

महिन्दर ने अपना अनुमान बत[illegible] 'सुनो, हो सकता है कि इंगलैंड जेल में द[illegible] एक ही कोठरी में रहे हों, जग्गी ने अलीब[illegible] को छुपे नोटों या खजाने के बारे में बत[illegible] लेकिन असली भेद नहीं बताया होगा [illegible] किस जगह छुपा रखा है। अलीबाबा [illegible] उसने शायद यह कहा हो कि उसे अगर [illegible] हो गया तो खजाने का पता उसे बता देग[illegible] अब अलीबाबा को जेल हस्पताल से यह [illegible] मिलता है जग्गी मरण शय्या पर पड़ा [illegible] अलीबाबा को पूरी उम्मीद है कि अपने ब[illegible] के अनुसार जग्गी उसे भेद बता देगा।

वह पत्र में भेद ढूंढने की को[illegible] करता है लेकिन सफल नहीं हो पाता। [illegible] बीच कुछ और अपराधी तत्वों को [illegible] जग्गी व अलीबाबा की मित्रता का पता [illegible] खजाने के बारे में भनक मिलती है और [illegible] की मृत्यु का समाचार सुन उन्हें [illegible] विश्वास हो जाता है कि जग्गी ने उसे [illegible] बताया होगा क्योंकि मृत्यु से पहले और [illegible] को उसने पत्र नहीं लिखा था ! सारे बद[illegible] अलीबाबा के पीछे पड़ जाते हैं। अली[illegible] उनसे बचने के लिए पत्र संदूक में छिपा ग[illegible] हो जाता है।

सही कर जमा करें

राष्ट्र की शक्ति बढ़ायें

व्यक्तियों को जिनकी आय कर योग्य है, उन्हें स्वेच्छा
प्रायकर विवरणियां दाखिल करना एक कानूनी
यत्व है।

में चूक होने से जुर्माना करने ब्याज लगाने और
प्रयोजन, की कार्यवाही की जाती है।

ण कार्य चल रहा है

कर विभाग ने घर-घर जाकर सर्वेक्षण कार्य बड़े
ने पर प्रारम्भ कर दिया है। कोई भी व्यक्ति जिसकी
योग्य आय है और जिसने स्वेच्छा से आय विवरणी
खिल नहीं की है, उसे परिहार्य कठिनाइयों का सामना
ना पड़ेगा।

डक कार्यवाही से अपने आपको बचायें

लगने से पहले ही, आप स्वेच्छा से अपनी आय
वरणी दाखिल कर दीजिए। अपना कर अदा करें
र पूछताछ और निर्धारण सम्बन्धी कार्यवाहियों के
रान विभाग को अपना पूरा-पूरा सहयोग भी दीजिए।
के पश्चात आप अपने आयकर आयुक्त से आयकर
धिनियम की धारा २७३ क के अधीन ब्याज/जुर्माने
हटवाने/कम कराने के लिए सम्पर्क कर सकते हैं।
च्छा से अपनी धन कर विवरणी दाखिल करने के बाद
इसी तरह की राहत का लाभ उठा सकते हैं।
अधिक जानकारी के लिए कृपया आप अपने आय-
आयुक्त/आयकर अधिकारी अथवा जन सम्पर्क
कारी से मिलें।

निरीक्षण निदेशक
(गवेषणा, सांख्यिकी व प्रकाशन)
आयकर विभाग, नई दिल्ली
द्वारा जारी किया गया

८०/८४

ढक्कन

पंचतंत्र
सूट का नया डिजायन
धारीवाल जी, आप आज बहुत सीरियस नजर आ रहे हैं। क्या बात है ? कोई एलजेब्रा का फार्मूला हल होने में नहीं आ रहा है ? जरा हम भी तो सुनें आपकी परेशानी।
मुझे तो दिन-रात एक ही चिन्ता खाये जाती है मेरी चमड़ी पर यह धारियों का डिजायन। मुझे धारी वाले सूट बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। पता नहीं कुदरत को मुझसे किस जन्म का बदला लेना था।
मुझे तो चैक वाले डिजायन पसन्द हैं
बस इतनी-सी बात पर परेशान हुये बैठे थे। मेरे पास पेन्ट और ब्रुश है। तुम जैसा कहोगे वैसा डिजायन बनाया जा सकता है
सच ?
आड़ी धारियां खींचकर बना दिया चैक वाला डिजाइन, तुम्हारी पसन्द का। अब तो तुम खुश हो ?
अब तुम अपना सरनेम भी बदलो, धारीवाल की जगह चैकवाल या ग्रेवाल।
अब मैं खुश हूं। मनपसंद सूट पहनकर किसको खुशी नहीं होती ?
शेरसिंह जी जरा इधर आना। नीचे जेब्रों के झुंड की तरफ देखो।
क्या बात है तेन्दुलकर ? क्या नया शेर आया है इस इलाके में ?
यह बात नहीं है। जेब्रों के झुंड में एक अजीब जानवर नज़र आ रहा है आज तक सैंकड़ों जानवरों का शिकार किया लेकिन इस तरह का जानवर तो नहीं देखा। जेब्रों की धारियां ऊपर से नीचे होती हैं लेकिन यह चार खानों वाले डिजायन का क्या हो सकता है ?
आज मांबदौलत इसी नये जानवर का शिकार करके देखेंगे। लाओ मेरी दोनाली बन्दूक।
तेन्दुलकर, मुझे तो ऐसा लगता है कि कुदरत ने यह नया जानवर बहुत सोच समझ कर हमारे लिये बनाया है। उसने सोचा हम पेट तो भर लेते हैं लेकिन मनोरंजन नहीं कर पाते अब हम इस जानवर को खाने के बाद इसकी खाल बिछा कर इस पर शतरंज का खेल खेल सकते हैं।
ऊपरवाला बहुत समझदार है
शिक्षा : प्रकृति के डिजाइन में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।